ओशो सुगंधा

मार्च 2023

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

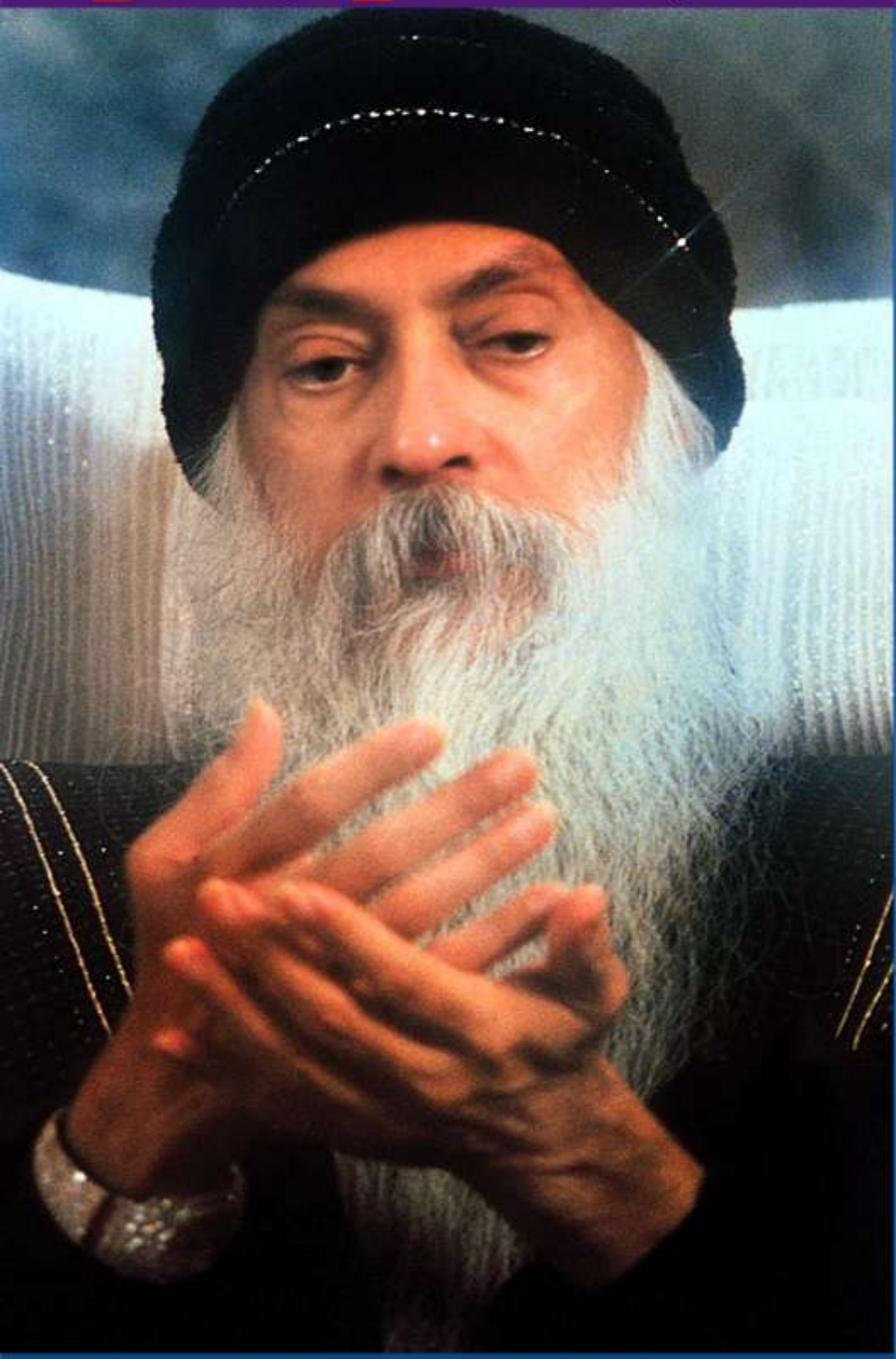

- शिवसूत्र : अंतरात्मा रंगमंच है
- जीवन - एक कहानी
- नए की खोज
- निर्भार होकर थोड़ा-सा नाचो-गाओ

ओशो सुगंधा

वर्ष-2/अंक-15 मार्च 2023

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

परमगुरू ओशो के चरणों में समर्पित

◆ प्रेरणास्त्रोत
स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती एवं मा अमृत प्रिया

◆ संपादन एवं संकलन
मा मोक्ष संगीता

◆ अन्य सहयोग
मस्तो बाबा

◆ कला एवं साज सज्जा
आनंद संदेश

contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंधा

पठनीय एवं श्रवणीय
मासिक ई-पत्रिका की **विशेषताएं**

यह एक जीवंत पत्रिका है
नीचे दर्शाए गए चिह्न इस पत्रिका में आपको विभिन्न जगह मिलेंगे, जिनके स्पर्श मात्र से सक्रिय हो जाएंगे

ऑडियो	इस बटन को स्पर्श करते ही आप संगीत का ऑडियो सुन अथवा डाउनलोड कर सकते हैं
वीडियो	इस बटन को स्पर्श करते ही आप वह वीडियो देख सकते हैं
व्हाट्स ऐप	इस बटन को स्पर्श करते ही आप व्हाट्स ऐप पर सम्बंधित व्यक्ति को संदेश भेज सकते हैं
गुगल मैप	इस बटन को स्पर्श करते ही आपके फ़ोन पर उस जगह का गुगल मैप खुल जाएगा
पुस्तक	इस बटन को स्पर्श करते ही आप PDF में पढ़ अथवा डाउनलोड कर सकते हैं
वेब साइट	इस बटन को स्पर्श करते ही आप सीधे उस वेब साइट पर जा सकते हैं
क्वोरा	इस बटन को स्पर्श करते ही आप सीधे हिंदी में क्वोरा पर पढ़ सकते हैं

अनुक्रम

1. शिवसूत्र : अंतरात्मा रंगमंच है 06
2. नए की खोज 10
3. निर्भार होकर थोड़ा–सा नाचो–गाओ 13
4. इस वृक्ष के समान नृत्य 15
5. Insight into sannyas name 16
6. मैंने रामरतन धन पायो 18
7. जीवन – एक कहानी (सार गर्भित कहानी) 20
8. होली पर्व का आध्यात्मिक भावार्थ 23
9. प्रभु ने छेड़ा मन का तार 26
10. असली संन्यास 29
11. क्वोरा लिंक 32
12. मा एवं स्वामी जी के वीडियो 33
13. म्यूजिक एलबम – **आलोक वर्षा** 34
14. हंस दो जरा 35
15. आगामी कार्यक्रम 36
16. समाचार 38
17. संपर्क सूत्र 39
18. पूर्व के संस्करण 40

स्वरहीन-संगीत में डूबो

–ओशो

प्रिय आनंद विजय,

प्रेम।

निकट ही है जीवन-स्रोत।

उसके पूर्व ही नादब्रह्म का अवतरण होता है।

नाद में डूबो और नाद से एक हो जाओ।

इस स्वरहीन संगीत में डूबे कि स्वयं को पाया।

खोया स्वयं को कि पाया।

२५-२-१९७१

(प्रतिः स्वामी आनंद विजय, जबलपुर)

शून्य में नृत्य और स्वरहीन संगीत

–ओशो

मेरे प्रिय,

प्रेम।

ऐसे ही जीओ कि अस्तित्व का कण-कण आंदोलित करे।

ऐसे ही हो जाओ कि अंततः तुम न बचो और मात्र आंदोलन ही बचें।

शून्य में हो उनका नृत्य।

और स्वरहीन हो उनका संगीत।

फिर ही समाधि है।

२६-२-१९७१

(प्रतिः श्री रामण्ण कथ्रेचा, राजकोट-२)

शिवसूत्र : अंतरात्मा रंगमंच है

–ओशो

'आत्मा नर्तक है। अंतरात्मा रंगमंच है।'

और यह जो नृत्य हो रहा है, यह कहीं बाहर नहीं हो रहा है; यह तुम्हारे भीतर ही चल रहा है। यह संसार रंगमंच नहीं है; तुम्हारी अंतरात्मा ही रंगमंच है। तुम कितना ही सोचो कि तुम बाहर चले गए हो, कोई बाहर जा नहीं सकता। जाओगे कैसे बाहर? तुम रहोगे अपने भीतर ही। वहीं सब खेल चल रहा है। सब खेल वहां चलता है, फिर बाहर उसके परिणाम दिखाई पड़ते हैं। ऐसे जैसे तुम कभी सिनेमागृह में जाते हो, तो परदे पर सब खेल दिखाई पड़ता है; लेकिन खेल असली में तुम्हारी पीठ के पीछे प्रोजेक्टर में चलता होता है, परदे पर सिर्फ दिखाई पड़ता है। परदा असली रंगमंच नहीं है। लेकिन आंखें तुम्हारी परदे पर लगी रहती हैं और तुम भूल ही जाओगे--भूल ही जाते हो--कि असली चीज पीछे चल रही है। सारा फिल्म का जाल पीछे है, परदे पर तो केवल उसका प्रतिफलन है।

'अंतरात्मा रंगमंच है।'

प्रोजेक्टर भीतर है। सब खेल के बीज भीतर से शुरू होते हैं, बाहर तो सिर्फ खबरें सुनाई पड़ती हैं; प्रतिध्वनियां सुनाई पड़ती हैं, और अगर बाहर दुख है, तो जानना कि भीतर तुम गलत फिल्म लिए बैठे हो। और बाहर तुम जो भी करते हो, गलत हो जाता है, तो उसका अर्थ है कि भीतर से तुम जो भी निकालते हो, वह सब गलत है। परदे को बदलने से कुछ भी न होगा। परदे को तुम कितना ही लीपो-पोतो, कोई फर्क न पड़ेगा। तुम्हारी फिल्म अगर गलत भीतर से आ रही है, तो परदा उसी कहानी को दोहराता रहेगा।

और न केवल तुम फिल्म हो, बल्कि तुम एक टूटे हुए रिकार्ड की भांति हो, जिसमें एक ही लाइन दोहरती जाती है, पुनरुक्ति होती जाती है।

तुमने कभी भीतर अपनी खोपड़ी की जांच-पड़ताल की? तो तुम पाओगे, वहां वही-वही चीजें दोहरती रहती हैं--टूटा हुआ रिकार्ड! तुम वही-वही दोहराते रहते हो। कुछ नया वहां नहीं घटता। और वहां तुम जो भी दोहराते हो, उसके प्रतिफलन चारों तरफ सुनाई पड़ते हैं, चारों तरफ जगत के परदे पर उसका प्रतिफलन होता है।

मुल्ला नसरुद्दीन एक दिन फिल्म देखने गया। पत्नी थी, साथ में उसका बच्चा था। और मुल्ला नसरुद्दीन का बच्चा! कोई ढंग का तो हो नहीं सकता; क्योंकि जब भीतर सब बेढंगा हो तो बाहर भी सब बेढंगा ही आता है। तो वह रो रहा है, चिल्ला रहा है, शोरगुल मचा रहा है। मैनेजर को कम से कम सात दफा आना पड़ा कि भाई, आप अपने पैसे वापस ले लें और जाएं या इस बच्चे को चुप रखें। मगर वह काहे को चुप रहने वाला था! बार-बार मैनेजर को आना पड़ा। नसरुद्दीन सुन लेता और चुप बैठा देखता रहा। जब फिल्म बिल्कुल आखिरी करीब आने लगी तो उसने अपनी पत्नी से पूछा, क्या ख्याल है, फिल्म ठीक कि गलत? पत्नी ने कहा, बिल्कुल बेकार है। तो उसने कहा, अब देर मत कर। जोर से चिउंटी ले दे लड़के को, ताकि पैसे वापस लें और घर जाएं।

तुम बहुत दिन से देख रहे हो! कई जन्मों से देख रहे हो, सब गलत है! कब चिउंटी लोगे? खुद को लेनी पड़ेगी; यहां कोई दूसरा नहीं है। कब तुम जागोगे और वापस लौटोगे? और क्या जरूरत है इस गलत को देखने की जो तुम्हें कष्ट से भर रहा है, जो तुम्हें पीड़ा और बोझ दे रहा है, सिवाय संताप के और दुख-स्वप्नों के जिससे कुछ भी पैदा नहीं होता? इस भवन को तुम छोड़ सकते हो। इस भवन में तुम अपने ही कारण रुके हो। क्यों देर कर रहे हो? अभी मन भरा नहीं? अगर मन न भरा हो, तो फिर बुद्ध, महावीर, कृष्ण, शिव, जीसस, इनकी बकवास में क्यों पड़ते हो? अगर मन न भरा हो, तो इनकी बातें मत सुनो; इनसे दूर रहो, इनसे बचो। क्योंकि ये केवल उनके लिए ही सार्थक हैं, जिनका मन भर गया हो और जिन्होंने फिल्म काफी देख ली; जो ऊब गए अब वहां से; जो अब नरक से बेचैन हो गए हैं और एक स्वर्गीय नृत्य की आकांक्षा जिनमें जग गई है; जिनकी अभीप्सा अब परमात्मा के लिए है। लेकिन तुम्हारी मनोदशा ऐसी है कि तुम दो नावों में सवार होना चाहते हो। उसी से तुम्हारा कष्ट और भी बढ़ जाता है। तुम इस संसार को भी भोगना चाहते हो। चाहे कितना ही दुख हो यहां, लेकिन थोड़ी आशा बनी रहती है कि सुख होगा, बस अब होने के ही करीब है। आशा टिकाए रखती है। और तुम्हारा अनुभव तुमसे कहता है कि होने वाला नहीं है; क्योंकि कई दफा तुम यह आशा कर चुके हो, सदा असफल गई। अनुभव तो बुद्धों के पक्ष में है; आशा बुद्धों के खिलाफ है। और तुम दोनों से भरे हो। और दो नावें हैं। तो आशा की नाव पर भी तुम एक पैर रखे रहते हो कि शायद थोड़ी देर और। इस स्त्री से सुख नहीं मिला तो शायद दूसरी स्त्री से मिल जाए! इस बेटे से सुख नहीं मिला तो दूसरे बेटे से मिल जाए! इस धंधे में सफलता नहीं मिली तो दूसरे धंधे में मिल जाए! तुम सदा आस-पास की चीजें बदलते रहते हो। इस मकान में सुख नहीं तो दूसरे मकान में मिल जाए! यह छोटी है तिजोरी, थोड़ी बड़ी हो जाए तो मिलेगा। तुम कुछ न कुछ आस-पास बदलते रहते हो--परदे में फर्क करते रहते हो। लेकिन तुम्हारे भीतर की कथा वही है; वही कथा प्रोजेक्ट होती है परदे पर।

हर जगह तुम्हें दुख मिलता है। अनुभव तो दुख का है, आशा सुख की है--दो नावें हैं। बुद्ध, महावीर, कृष्ण को सुनोगे तो वे अनुभव की बात कह रहे हैं। वे कह रहे हैं, उतर आओ आशा की नाव से, अनुभव की नाव पर सवार हो जाओ। तुम सुनते भी हो उनकी, क्योंकि उनको भी तुम इनकार नहीं कर सकते। और उन्हें देख कर भी तुम्हें भरोसा आता है कि जो हमें नहीं मिला है, लगता है इन्हें मिला है; क्योंकि उनकी दौड़ समाप्त हो गई। लेकिन भरोसा पूरा भी नहीं आता, क्योंकि पता नहीं धोखा दे रहे हों! कौन जाने, न मिला हो, ऐसे ही कह रहे हों! कौन जाने, इन्हें न मिला हो, हमें मिल जाए! ये कहते हैं, अंगूर खट्टे हैं। हो सकता है न पहुंच पाए हों अंगूरों तक और हम पहुंच जाएं!

तो आशा भी छूटती नहीं। अनुभव भी एकदम गलत है, ऐसा कहना कठिन है। इस तरह तुम द्वंद्व में हो। यह द्वंद्वही तुम्हारी विक्षिप्तता है। और ये दोनों नावें अलग-अलग यात्रा पर हैं। तुम एक पर सवार हो जाओ। कोई जल्दी नहीं है, तुम संसार की नाव पर ही पूरे सवार हो जाओ। जल्दी ही तुम ऊब जाओगे। लेकिन यह बुद्धों की नाव पर तुम्हारा जो पैर है, यह तुम्हें संसार का भी पूरा अनुभव नहीं होने देता। वहां भी तुम आधे-आधे जाते हो; क्योंकि यह बुद्धों का ख्याल तुम्हारी आधी टांग को पकड़े हुए है। तो तुम मंदिर भी सम्हालते हो, दुकान भी सम्हालते हो; न दुकान सम्हलती है, न मंदिर सम्हलता है।

ये दोनों साथ सम्हल नहीं सकते। तुम पूरी तरह दुकान पर ही चले जाओ। भूल जाओ कि कभी कोई बुद्ध हुआ, कोई महावीर, कोई कृष्ण हुआ, शिव हुए। भूलो! ये कोई शास्त्र हैं, सब भूलो! बस खाता-बही सब कुछ हैं। एक बार तुम पूरे वहां लग जाओ, तो जल्दी ही तुम वहां से बाहर निकल आओगे। तुम्हारा अनुभव ही तुम्हें कहेगा कि सब व्यर्थ है।

वह भी नहीं हो पाता और बुद्धों की नाव में तुम पूरे सवार नहीं हो पाते; क्योंकि तुम्हारा मन कहे चला जाता है कि अभी जल्दी मत करो, अभी बहुत समय है! और अभी तुम्हारी उम्र ही क्या? ये तो बुढ़ापे की बातें हैं। जब बिल्कुल मरने लगो और एक पैर कब्र में चला जाए, तब तुम दूसरा पैर बुद्ध की नाव पर सवार कर लेना! अभी क्या जल्दी है!

तो लोग सोचते हैं कि धर्म बुढ़ापे के लिए है। जब बिल्कुल मरने लगेंगे, तब उन्हें गंगा-जल की जरूरत पड़ती है। जब बिल्कुल मरने लगेंगे, तब कोई उनके कान में नमोकार मंत्र दोहरा दे। मरते वक्त, जब सब व्यर्थ हो गया और जब कोई ऊर्जा न बची, कोई शक्ति न बची यात्रा की, तब तुम यात्रा को तैयार होते हो। नहीं, तुम फिर गिरोगे वापस संसार में! फिर तुम उसी नाव पर सवार होओगे! ऐसा तुम अनंत बार कर चुके हो!

'आत्मा नर्तक है। अंतरात्मा रंगमंच है।'

ध्यान रखो, जो भी तुम्हें बाहर दिखाई पड़ता है, वह तुमने भीतर से बाहर डाला है। तुम जीवन में वही देखते हो, जो तुम डालते हो। और तुम्हारे जीवन में भी कई मौके आते हैं।

मैंने सुना है, एक मुसाफिरखाने में तीन यात्री मिले। एक बूढ़ा था साठ साल का, एक कोई पैंतालीस साल का अधेड़ आदमी था और एक कोई तीस साल का जवान था। तीनों बातचीत में लग गए। उस जवान आदमी ने कहा, कल रात एक ऐसी स्त्री के साथ मैंने बिताई कि इससे सुंदर स्त्री संसार में दूसरी नहीं हो सकती। और जो सुख मैंने पाया, अवर्णनीय है।

पैंतालीस साल के आदमी ने कहा, छोड़ो बकवास! बहुत स्त्रियां मैंने देखीं। वे सब अवर्णनीय जो सुख मालूम पड़ते हैं, कुछ अवर्णनीय नहीं हैं, सुख भी नहीं हैं। सुख मैंने जाना कल रात। राज-भोज में आमंत्रित था। ऐसा सुस्वादु भोजन कभी जीवन में जाना नहीं।

बूढ़े आदमी ने कहा, यह भी बकवास है। असली बात मुझसे पूछो। आज सुबह ऐसा दस्त हुआ, पेट इतना साफ हुआ, ऐसा आनंद मैंने कभी जाना नहीं; अवर्णनीय!

बस संसार के सब सुख ऐसे ही हैं। उम्र के साथ बदल जाते हैं; लेकिन तुम ही भूल जाते हो।

तीस साल की उम्र में कामवासना बड़ा सुख देती मालूम पड़ती है। पैंतालीस साल की उम्र में भोजन ज्यादा सुखद हो जाता है। इसलिए अक्सर चालीस-पैंतालीस के पास लोग मोटे होने लगते हैं। साठ साल के करीब भोजन में कोई रस नहीं रह जाता, सिर्फ पेट ठीक से साफ हो जाए! तो जो समाधि सुख मिलता है, वह किसी और चीज में नहीं। तीनों ही ठीक कह रहे हैं, क्योंकि संसार के सुख बस ऐसे ही हैं। और इन सुखों के लिए हम कितने जीवन गंवाए हैं! और ये मिल भी जाएं तो भी कुछ नहीं मिलता। क्या मिलेगा?

'अंतरात्मा रंगमंच है।'

बाहर तुम वही देखते हो जो तुम भीतर से डालते हो। जवान आदमी की आंखों से वासना बाहर जाती है। उसका सारा शरीर वासना के तत्वों से भरा है। वह जहां भी देखता है, वहां स्त्री दिखाई पड़ती है। सब तरफ कामवासना ही उसे पकड़ लेती है।

मुल्ला नसरुद्दीन जवान था। पत्नी के साथ, एक चित्रों की प्रदर्शनी थी, वहां गया। नयी-नयी शादी थी और जगह-जगह घूमने का ख्याल था। प्रदर्शनी में बड़े कीमती चित्र थे। एक चित्र के पास नसरुद्दीन रुक गया और देर तक ठहरा रहा। भूल ही गया कि पत्नी भी साथ है। चित्र एक नग्न स्त्री का था--अति सुंदर! और नग्नता बस थोड़े से दो-चार पत्तों से ढंकी थी। चित्र का नाम था वसंत। वह ठगा सा खड़ा था। आखिर पत्नी ने उसका हाथ झकझोरा और कहा, क्या पतझड़ की प्रतीक्षा कर रहे हो?

बस ऐसा ही आदमी का मन है। पत्नी ठीक ही पहचानी। पत्नियां अक्सर ठीक पहचान लेती हैं।

तुम्हारे भीतर जो जोर मार रहा हो, वही चारों तरफ का संसार हो जाता है; तुम उसे रंगते हो। हमारे पास एक शब्द है बड़ा बहुमूल्य, दुनिया की किसी भाषा में वैसा शब्द खोजना कठिन है, वह है राग। राग का मतलब आसक्ति भी होता है, राग का मतलब रंग भी होता है। तुम्हारी सब आसक्ति, तुम्हारी आंखों से फेंके गए रंग का परिणाम है। तुम रंगते हो चीजों को। जिन-जिन को तुम रंग लेते हो, वहीं राग पकड़ जाता है। राग का अर्थ है: तुमने रंग लिया।

स्त्री सुंदर नहीं होती; तुम्हारे भीतर कामवासना का रंग होता है, तो स्त्री सुंदर दिखाई पड़ती है। छोटे बच्चे को कोई फिक्र नहीं है; अभी कामवासना का रंग पका नहीं। बूढ़े का रंग जा चुका। वह तुम्हारी मूढ़ता पर हंसता है; हालांकि यही मूढ़ता उसने भी की है। तुम भी हंसोगे। लेकिन मूढ़ता करते वक्त जो पहचान ले और समझ ले, वह जाग जाता है। मूढ़ता का रंग जब चला जाए, तब हंसने में कोई बहुत अर्थ नहीं है। तब तो कोई भी हंसता है। लेकिन जब मूढ़ता पकड़े हुए है और रंग जोर में है, तब भी तुम जाग जाओ और पहचान लो कि सब भीतर का ही खेल बाहर दिखाई पड़ रहा है; बाहर कुछ भी नहीं है, कोरा पर्दा है। अंतरात्मा ही रंगमंच है, और वहीं प्रोजेक्टर है, और वहीं से हम सारा फैलाव कर रहे हैं।

-ओशो, शिव सूत्र-६

नए की खोज

–ओशो

प्रश्न- मैं सदा नए की खोज में लगा रहता हूं। कुछ भी नया हो, तो मुझे भाता है। इसमें कुछ भूल तो नहीं है?

भूल तो निश्चित है। कुछ नहीं; बड़ी भूल है। क्योंकि यही तो मन के जीने का ढंग है। मन सदा नए की तलाश करता है। मन नए के लिए खुजलाहट है। पुरानी पत्नी नहीं भाती; नयी पत्नी चाहिए। पुराना मकान नहीं भाता; नया मकान चाहिए। पुराने कपड़े नहीं भाते; नए कपड़े चाहिए। हमेशा नया चाहिए। यही तो मन है, जो दौड़ाता है। नए की इस आकांक्षा से महत्वाकांक्षा पैदा होती है। और तुम सदा बेचैन रहते हो। आखिर हर नयी चीज पुरानी पड़ जाएगी, और बेचैनी बढ़ती ही चली जाएगी।

पश्चिम में इतनी बेचैनी है, क्योंकि नए की बहुत पागल दौड़ है। हर चीज नयी होनी चाहिए। उपयोगिता का भी सवाल नहीं है; नए का सवाल है। हो सकता है, पुरानी चीज ज्यादा बेहतर हो; ज्यादा मजबूत हो; ज्यादा काम की हो। लेकिन इससे कोई संबंध नहीं है। नयी चीज चाहिए। नयी बदतर हो, तो भी चलेगा। टीम-टाम हो, तो भी चलेगा। मगर नयी चाहिए।

फिर नए की दौड़ पूरी करने में तुम्हारा जीवन लग जाता है। और नया कभी कुछ भी नहीं हो पाता। चीजें कहीं नयी हो सकती हैं? चीजों की दौड़ का कोई अंत नहीं है। इसी में समाप्त हो जाओगे।

हां; एक और ढंग है जीने का। जो है बाहर, ठीक है। अगर नए को ही खोजना है, तो भीतर खोजो। भीतर पुराने को काटो।

दुनिया में दो तरह के लोग हैं- बाहर पुराने को नए में बदलते रहते हैं- इनका नाम संसारी। और जो भीतर पुराने को काटते और प्रतिपल नयी चेतना को मुक्त करते रहते हैं अतीत से- इनका नाम संन्यासी।

स्मृति को जाने दो; भीतर अतीत का बोझ मत ढोओ; भीतर जो अतीत का कूड़ा-कचरा इकट्ठा हो गया है, उसे हमेशा आग लगाते रहो, जलाते रहो। भीतर नए रहो। और तुम परम आनंद पाओगे। भीतर का नयापन दिव्य में प्रवेश बन जाएगा।

बाहर के नएपन से क्या होगा? और शायद हम बाहर नयापन इसलिए खोजते हैं कि हमारे भीतर नए की तलाश है- भीतर- और हम भूल से बाहर खोजते हैं। भीतर चाहिए युवापन, नयापन, ताजगी, सुबह की ताजगी; सुबह की ओस की बूंदों की ताजगी; सुबह के सूरज की ताजगी; सुबह के फूल की ताजगी। ऐसी भीतर चाहिए दशा। भीतर तो नहीं खोजते। सोचते हैं- नयी कार ले आएं; नया मकान बना लें; नयी स्त्री मिल जाए; नयी दुकान खोल लें; नया धंधा कर लें; तो शायद हल हो जाएगा। नहीं हल होगा।

सिकंदरों का हल नहीं होता; तुम्हारा कैसे हल होगा! जिनके पास बहुत है, उनका हल नहीं होता; तुम्हारा कैसे हल होगा?

इस गलत दिशा से अपने चित्त को मुक्त करो। भीतर नए होने की कला सीखो। यह नयापन सिर्फ तुम्हें उलझाए रखता है, व्यस्त रखता है।

किनारे पर बैठकर
कंकड़ें फेंकते
गुजर गए हैं बहुत दिन
पर, फिर भी तो
इस मौन के समुंदर में
कोई हलचल नहीं है
वैसे ही जड़ है यह
यातनाओं का रेगिस्तान
चलो,
शब्दों की किश्तियां
तैराएं
ख्वाबों के नखलिस्तान
उगाएं
संकरी हो आयी
चेतना की पगडंडियों पर
अब नहीं चला जाता
आओ,
कुछ नया ढूंढ लाएं
गुलाबी हथेलियों पर
सरसों उगाए
जिससे पहाड़-से ये लंबे-लंबे दिन
बीत जाएं
कुछ न कुछ करते रहो। चलो, हाथ पर
सरसों उगाएं! कुछ न कुछ करते रहो!

देखा तुमने- नदी के किनारे बैठ जाते हो, तो उठा-उठाकर पत्थर ही फेंकने लगते हो

नदी में! कुछ न कुछ करते रहो! घर में आते हो, तो खटर-पटर करते हो। यह चीज यहां रख दो, यह चीज वहां रख दो; खिड़की खोलो, बंद करो। कुछ न कुछ करते रहो! क्यों? क्योंकि जब खाली हो जाते हो, तब घबड़ाहट लगती है।

खाली होने का रस तुम्हें नहीं है। खाली होने का मजा तुम्हें नहीं है। खाली होने का उत्सव तुमने नहीं जाना है। जब खाली हो जाते हो, तो भय लगता है। कंपने लगते। उलझाए रहो। भूले रहो। तो अपने को विस्मृत किए रहते। यह उलझाव एक तरह की शराब है।

शराबी क्या करता है? यही करता है, जो तुम कर रहे हो। शराबी यही करता है कि शराब पीकर अपने को भुला लेता है। तुम और ढंग से भुलाते हो।

अंग्रेजी में अल्कोहलिक के मुकाबले एक शब्द और अभी-अभी निर्मित हो गया है- वर्कोहलिक। एक तो वह है, जो शराब पीकर अपने को भुलाता है। और एक वह है, जो काम में अपने को भुलाए रखता है- वर्कोहलिक!

मोरारजी देसाई- वर्कोहलिक! शराब के विरोधी; शराब के दुश्मन; शराब जानी चाहिए। मगर उनको ख्याल नहीं है कि शराबी भी वही कर रहा है। तुम राजनीति में उलझकर वही कर लेते हो। अपने को उलझाए हो; लगाए हो। भागे जा रहे हैं। दौड़े जा रहे हैं! कोल्हू के बैल की तरह जुते हैं। ऐसे जुते-जुते एक दिन मर जाते हो। यह भी तुम्हारा बेहोश होने का ढंग है। अपनी याद न आए। अपने से बचने का उपाय है यह सब।

यह नए की खोज अपने से बचने का उपाय है। और अपना साक्षात्कार करना है, अपने से बचना नहीं है। अपने आमने-सामने आना है। अपने को पहचानना है। अपनी पहचान के बिना तुम्हारे जीवन का रहस्य खुलेगा ही नहीं।

इस आत्मा से, जिससे तुम बचते फिर रहे हो, इसी के साथ सगाई करनी है; इसी के साथ गठबंधन करना है। खाली बैठे हैं; रेडियो खोल लेते; अखबार पढ़ने लगते। चले, उठे, क्लब चले। कि चलो होटल हो आएं, कि चलो सिनेमा देख आएं। किसी तरह दिन गुजार दें। फिर पड़ जाएं बिस्तर पर, और सो जाएं। सुबह फिर दौड़-धूप शुरू हो जाएगी। ऐसे ही जिंदगी बीत जाएगी। दिन आएंगे और चले जाएंगे। कब जन्म मृत्यु बन जाएगी, तुम्हें पता भी न चलेगा। तुम बेहोशी बेहोशी में ही गुजार दोगे।

नहीं; यह नए की तलाश खतरनाक है- बाहर। बड़ी खतरनाक है। अगर भीतर इसकी दिशा मोड़ दो, तो यही साधना बन जाती है। फिर तुम नया काम नहीं खोजते; नया धंधा नहीं खोजते; नया सामान नहीं खोजते। फिर तुम नयी चेतना खोजते हो; फिर तुम नयी बोध की दशाएं खोजते हो। फिर तुम कहते हो- और ध्यान की गहराइयों में जाऊं, ताकि और नए-नए स्रोत मिलते जाएं। जितना तुम भीतर खुदाई करोगे, उतने ही ज्यादा स्वच्छ जल के स्रोत मिलने लगेंगे।

जैसे कोई कुएं को खोदता है, तो पहले तो कूड़ा-कर्कट हाथ लगता है। फिर रूखे मिट्टी-पत्थर हाथ लगते हैं। फिर धीरे-धीरे गीली भूमि हाथ आती है। फिर जल के स्रोत मिलने शुरू होते हैं। फिर और गहरे जाकर स्वच्छ जल मिलना शुरू होता है।

अपने भीतर खुदाई करो। अपने को कुआं बनाओ। और तुम्हारे भीतर परमात्मा का जल है। तुम्हारे भीतर समाधि की संभावना है।

-ओशो, एस धम्मो सनंतनो-१०६

निर्भार होकर थोड़ा-सा नाचो-गाओ

–ओशो

इस क्षण में जीना शुरू करो और तुम पाओगे कि जितना तुम जीना शुरू करते हो, उतनी कम समस्याएं हैं। तुम्हारी शून्यता पल्लवित-पुष्पित और जीवंत होने लगी है। अगर तुम वर्तमान में नहीं जीते तो यही ऊर्जा नकारात्मक हो जाती है। जीवन-ऊर्जा जो फूल बन सकती है, अगर रुक जाये, खिलने न दिया जाये तो यह हमारे हृदय में कांटा बन जाती है। शक्ति वही है।

अगर आदमी थोड़ा-सा नाच सके, थोड़ा-सा और गा सके, थोड़ा-सा और दीवाना हो सके, तो उसकी ऊर्जा और अच्छी तरह से बहेगी और उसकी समस्याएं धीरे-धीरे गायब हो जायेंगी। इसीलिए मैं नृत्य पर इतना जोर देता हूं। चरम आवेग तक नाचो, संपूर्ण प्राण-शक्ति को नृत्य बन जाने दो और अचानक तुम महसूस करोगे कि जैसे तुम्हारा सिर ही नहीं है- जो ऊर्जा मस्तिष्क में फंस गई थी, वह अब चारों ओर घूमने लगी है, सुंदर रूप, आकृति व गति बना रही है। जब तुम नाचते हो तो एक क्षण ऐसा आता है जब तुम्हारा शरीर सख्त नहीं बचता, लचीला होकर बहने-सा लगता है। नृत्य के दौरान एक पल ऐसा आता है जब तुम्हारी रूपरेखाएं स्पष्ट नहीं बचतीं, तुम पिघलने लगते हो, ब्रह्मांड से मिलने लगते हो, सीमाएं खोने लगती हैं।

एक नर्तक को गौर से देखो- तुम पाओगे कि वह एक ऊर्जापुंज बन गया है- वह ढांचे में नहीं रहा, किसी सांचे में नहीं रहा। मानो, वह अपने रूप-आकार से बाहर प्रवाहित हो रहा है। और-और अधिक जीवंत होता जा रहा है। लेकिन यह तुम तभी जानोगे जब तुम स्वयं नाचोगे। तुम्हारा अंदर का मन विलीन हो जायेगा, तुम फिर से बच्चे जैसे निर्दोष, निर्भार बन जाओगे। फिर कोई मानसिक समस्या खड़ी नहीं होगी।

समग्रता से जियो, नाचो, गाओ, सोओ, खाओ। हर काम संपूर्णता से करो। और एक बात बारंबार याद रखो, जहां भी तुम अपने आपको समस्या खड़ी करते हुए पाओ, वहां से तुरंत विदा ले लो। एक बार तुम किसी समस्या में फंस गए तो फिर समाधान की जरूरत पड़ेगी। और अगर तुमने समाधान ढूंढ़ भी लिया तो इस समाधान से हजार समस्याएं पैदा हो जायेंगी। अगर तुम पहला कदम गलत उठा लिए तो तुम जाल में उलझ गए!

जब भी तुम स्वयं को समस्याओं की तरफ जाते हुए देखो, अपने आपको पकड़ो... बेहतर है दौड़ो, कूदो, नाचो, लेकिन समस्या में मत फंसो। कुछ ऐसा तुरंत करो कि जो ऊर्जा समस्या खड़ी कर रही थी वह तरल हो जाये, टूट जाये, पिघल जाये और पुनः अस्तित्व की ओर चल पड़े।

जो प्रकृति के पास रहते हैं उनके पास ज्यादा समस्याएं नहीं होती हैं। मैं भारत में ऐसे कबीलों के लोगों से मिला हूं जो बताते हैं कि उनको कभी सपने नहीं आते। फ्रायड इस बात का बिल्कुल विश्वास नहीं करेगा। सामान्यतः वे लोग सपने नहीं देखते। किन्तु कभी-कभी कोई व्यक्ति सपना देख लेता है तो कबीले के लोग प्रार्थना और उपवास करते हैं कि कुछ गलत हो गया है। एक आदमी ने सपना देखा। कुछ गड़गड़ हो गई!

उनके कबीले में ऐसा इसीलिए होता है क्योंकि वे संपूर्णता से जीते हैं कि मन में ऐसी कोई चीज नहीं बचती जिसे नींद के दौरान पूरा करना पड़े। जो काम तुम अधूरा छोड़ देते हो, वह सपने में पूरा करना जरूरी हो जाता है। जो तुम दिन में नहीं जी पाये, वह छाया की तरह पीछा करता है और रात को अवचेतन मन में पूरा होता है। इस तरह स्वप्न निर्मित होता है। तुम पूरा दिन सोचते रहते हो। सोच यही सिद्ध करती है कि तुम जितनी ऊर्जा जीने के लिए उपयोग करते हो उससे ज्यादा, अतिरिक्त ऊर्जा तुम्हारे पास है। तुम्हारे पास जीवन की जरूरतों से बहुत ज्यादा शक्ति बची रहती है।

तुम असली जिंदगी को ठीक से नहीं जी रहे हो। थोड़ा और ज्यादा ऊर्जा का उपयोग करो। ताजी ऊर्जा बहने लगेगी। कंजूस मत बनो। अभी उपयोग करो, आज का दिन पूर्णता से जियो। कल स्वयं अपनी चिंता करेगा, कल के बारे में फिक्र मत करो। चिंता, बेचैनी, समस्या; सभी एक ही चीज की ओर इंगित करती हैं कि तुम सही ढंग से नहीं जी रहे हो, कि तुम्हारे जीवन में उत्सव, नृत्य, त्यौहार नहीं है। और इसीलिए तुम्हारी जिंदगी सिर्फ समस्याओं का एक ढेर हो गई है।

–ओशो के अंग्रेजी प्रवचन से (अनुवाद- डॉ. प्रमोद जैन)

इस वृक्ष के समान नृत्य

–ओशो

अपने हाथों को ऊपर उठा लें और इस तरह झूमें जैसे तेज हवा में कोई वृक्ष झूमता हो। जैसे वर्षा में और हवाओं में कोई वृक्ष नृत्य करता हो, इस भांति नृत्य करें। अपनी संपूर्ण ऊर्जा को नृत्य में बढ़ने हैं। झूमें और हवा के साथ नाचें, हवा को अपने में से गुजरता हुआ महसूस करें। भूल जाएं कि आपके पास मानव-शरीर है--आप एक वृक्ष हैं, वृक्ष ही हो जाएं। यदि संभव हो तो खुले में चले जाएं, वृक्षों के बीच में खड़े हो जाएं, वृक्ष हो जाएं और हवाओं को अपने में से गुजरने दें।

वृक्ष जैसा अनुभव करना बहुत ही शक्तिदायक और प्राणवर्द्धक अनुभव है। इससे व्यक्ति बहुत ही आसानी से नैसर्गिक चेतना में चला जाता है। वृक्ष अभी भी वहीं है। वृक्षों से बातें करें, वृक्षों को गले लगाएं और अचानक आप महसूस करेंगे कि सब कुछ वापस आ गया है। यदि बाहर बगीचे में या खुले में जाना संभव न हो तो अपने कमरे के बीच में खड़े हो जाएं और भाव करें कि आप एक वृक्ष है और वृक्ष की भांति नृत्य शुरू कर दें।

Insight into Sannyas Names

OSHO

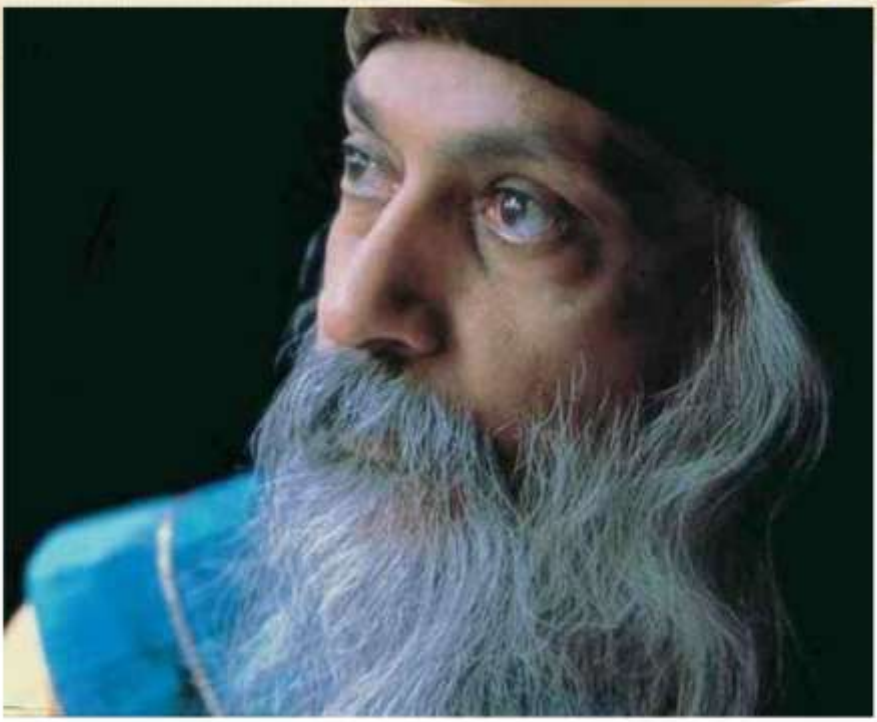

Prem means love and Dhruva is the sanskrit word for the polar star. This is the star which is the most permanent, unmoving star. Everything goes on moving but this is the only star which doesn't move.

'Love is the polar star' -- that is the meaning of the name. Everything moves, only love never moves. Everything changes, only love remains permanent. In this changing world only love is the unchanging substance. Everything else is a flux, momentary. Only love is eternal.

So these two things you have to remember. One is love, because that is the only thing that is non-illusory. That is the only reality; everything else is a dream. So if one can become loving, one becomes real. If one attains to total love, one has become himself, the truth, because love is the only truth.

And the second thing, Dhruva. When you are walking, remember that something in you never walks. That's your soul, your polar star. You eat, but something in you never eats. You become angry, but something in you never becomes angry. You do a thousand and one things, but something in you remains absolutely beyond doing. That is your polar star. So walking, remember that which never walks. Moving, remember the immobile. Talking, remember silence. Doing things, remember being.

Always remember that which is absolutely permanent, which never flickers, never wavers, which knows no change. That unchanging one within you is the real. And love is the way to find it.

That's why I call love the most real thing. So love is going to be the path. And that polar star within you -- call it God, kingdom of the within, atma, soul, or whatsoever -- but that polar star, that permanent substance in you, your very essence, that is the goal. Love is the way.

The more loving you become, the closer you come to your polar star. The more unloving you are, the father you are from your polar star. So love really is nothing but closeness to one's being. That's why everybody is hankering for love so much because when love is there, you are. When love is not there, you are not. When love is not there, then you are just a dream. When love is there, then you are really tremendously real. Only in a few moments of love, one touches the substratum of life, the ground, the very ground. Love gives you a grounding... one feels rooted.

So love, and when somebody else loves you, allow it; never create any barriers. People do two wrong things. First, they make themselves so hard that they cannot love. And then when somebody comes and knocks at their door, they refuse, because by refusing love the ego feels very very good. The ego always feels good whenever love is refused because it feels powerful. Whenever love is accepted, the ego feels powerless.

If you love, the ego disappears. If you don't love, the ego becomes more and more concrete. So people don't love, and even if somebody wants to share his being with them, or her being with them, they refuse. They go on becoming more and more hard and father away from reality.

So remember two things: love is the way and the unmoving within you is the goal. That is the real self, the supreme self. The quality of that supreme self is witnessing. It only witnesses, it is not a doer. You walk; it witnesses walking. You eat; it witnesses eating. You become angry; it witnesses anger. It simply witnesses. It is just consciousness, that's all... pure consciousness.

So love and go on falling into that consciousness. And nothing else is needed. This is all religion is about. In these two words the whole religion can be summarized.

... it is the part that loves. So if you love, you fall into that part. It starts functioning, it becomes alive. If you don't love, it becomes dead, far away, distant.

One can live an unloving life when one is not in touch with one's own being. When you live a loving life, you live in touch with your being. Your contents are constantly in contact with your being.

So love is the way to reach to one's own self. The closer you reach, the more you become capable of love. The more you love, the more you become capable of reaching into your own self. So they are one in a way.

But about the ultimate being, nothing can be done. But about love, something can be done. You can be loving. You can be open. You can be in a let-go.

- A rose is a rose is a rose

मैंने रामरतन धन पायो

–गोपालदास 'नीरज' (हिंदी साहित्य के महाकवि)

यदि आप सारे विशेषण उतारकर ऐसी शराब पीने के लिए तैयार हैं जिसका नशा जन्म जन्म तक नहीं उतरता तो ओशो के इस मीरा–मंदिर में आपका स्वागत है। हिंदी में भक्त कवियों की एक लंबी परंपरा रही है। भक्तों की इस मणि–माला में मीरा कौस्तुभ मणि के समान है। उसकी आभा सबसे अधिक मोहक, सबसे अधिक प्रखर और सबसे अधिक जीवंत है। भक्ति समग्र से कम पर संतुष्ट नहीं होती।

काव्यशास्त्र की दृष्टि से अथवा तर्क और ज्ञान की दृष्टि से यदि आप मीरा को समझना चाहेंगे तो चूक जाएंगे क्योंकि मीरा न कविता है न शास्त्र। वह प्रेम–पीड़ा की एक अदभुत अनुभूति है। मीरा के रूप में भक्ति शरीर धारण करके खड़ी हो गई है। प्रेम की इस साकार प्रतिमा की आंखों का एक–एक आंसू एक–एक छंद है और एक–एक पद एक–एक खंड काव्य है। जैसे अपने गिरधर–गोपाल तक पहुंचने के लिए मीरा लोक–लाज, कुल–कानि, मान–मर्यादा, घर–द्वार सब कुछ छोड़ चुकी है, उसी प्रकार जब तक ज्ञान के सारे सूत्र, तर्क के सारे छल, काव्य की सारी कलाएं आप भूलने के लिए तैयार नहीं हैं तब तक आप मीरा के पास नहीं पहुंच सकते। मीरा आंसुओं ने प्रेम के जितने रंग बिखेरे हैं उनको आंकने के लिए न तो कोई तूलिका और न कोई काव्यशास्त्र ही समर्थ है।

गाते हुए, थिरकते हुए दर्द का ही दूसरा नाम मीरा है। मीरा ने गाया है– हेरी मैं तो दरद दीवानी, मेरा दरद न जाने कोय, सचमुच ही कौन जानेगा यह दर्द? हम तो सिर्फ उस दर्द को ही जानते हैं जो हमें रुलाता है, लेकिन मीरा का दर्द कुछ और ही है। वह सिर्फ रुलाता ही नहीं, गीत भी गाता है। गांव–गली में नाचता भी है, मंदिरों में खड़ताल भी बजाता है और सूली के ऊपर प्रियतम के संग सेज भी बिछाता है। न जाने मीरा ने प्रेम की वह कौन सी मदिरा पी रखी है कि सदियों–सदियों न वहां पहुंचेगी दुनिया सारी, एक ही घूंट में मस्ताने जहां तक पहुंचे। मीरा दर्द की मस्ती से घायल भी है और पागल भी है। घायल से पागल होने तक का, मस्ती से हस्ती मिटाने तक का 'होने से 'न होने' तक का, और आंसुओं से संगीत तक का जितना भी सफर है वह सब मीरा के पदों की काव्य यात्रा है।

भक्ति के इस मंदिर में जो गया वो न तन लेके लौटा, न मन लेके लौटा। यहां तन-मन सब कुछ सौंपे बिना काम नहीं चलता और चूंकि पुरुष स्वभाव से कठोर होने के कारण पूरी तरह पिघल नहीं पाता है, समग्रतः अपने 'स्व' का विसर्जन नहीं कर पाता और नारी चूंकि स्वभाव से ही दानशील है, कोमल है, प्रकृति ने ही इसे ऐसा बनाया है, अतः वह प्रेमाग्नि मोमबत्ती के समान समग्रतः पिघल जाती है। इसलिए भक्ति के क्षेत्र में नारी सदैव से पुरुषों को पीछे छोड़ती आई है। नारी जब प्रेम करती तो संपूर्ण से ही करती है। यदि संपूर्ण से प्रेम नहीं करती तो समझो वह प्रेम ही नहीं करती- यह आग का दरिया है और डूब के जाना है।

मीरा को लोग गाते हैं, गुनगुनाते हैं, लेकिन विरले ही उसके पदों की आत्मा तक पहुंच पाते हैं। ओशो ही एक अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने मीरा के अश्रु-सरोवर में गहरे तक डूबकर स्नान किया है- ऐसा इसलिए संभव हो सका है कि मीरा के समान ही उनका भी जीवन प्रेम का एक महाकाव्य है। प्रेम ही उनका ओढ़ना है, प्रेम ही उनका बिछौना है। उनका समस्त अस्तित्व ही प्रेम की एक प्यासी पुकार है। हृदय के उस अंतःपुर की झांकी, जहां मीरा ने गोपाल को पाया था, ओशो ने खूब-खूब देखी है। उनका ओशो मंदिर प्रेम का ही एक मंदिर है मगर वहां आने के लिए कुछ शर्तें हैं-

यह प्यासों का प्रेम नगर है यहां सम्हलकर आना जी,
जो भी आए यहां किसी का हो जाए दीवाना जी।
ऐसा बरसे रंग यहां पर, जनम-जनम तक भीगे
फागुन बिना चुनरिया भीगे, सावन बिना भवन भीगे
ऐसी बरखा होय यहां पर बचे न कोई घराना जी।
यह प्यासों का प्रेमनगर....
यहां न झगड़ा जाति-पांति का, और न झंझट मज़हब का,
एक सभी की प्यास यहां पर, एक ही है प्याला सब का
यहां पिया से मिलना हो तो परदे सभी हटाना जी।
यह प्यासों का प्रेमनगर है....
यहां दुई की सुई न चुभती, घुले बताश पानी में
पहने ताज फकीर घूमते, मौला की रजधानी में
यहां नाव में नदिया डूबे, सागर सीप समाना जी।
यह प्यासों का प्रेमनगर है....
चार धाम का पुण्य मिले, इस दर पर शीश झुकाने में
मज़ा कहां वह जीने में, जो मजा यहां मर जाने में
हाथ बांध कर मौत यहां पर चाहे खुद मर जाना जी।
यह प्यासों का प्रेमनगर है यहां सम्हलकर आना जी।।

'राम रतन धन पायो'- मीराबाई के पदों पर ओशो द्वारा दी गई दस प्रवचनों की यह दूसरी श्रंखला है। दस प्रवचनों की प्रथम प्रवचनमाला का शीर्षक है- 'झुक आई बदरिया सावन की'। बाद में इन दोनों को मिलाकर बीस प्रवचन की पुस्तक डीलक्स संस्करण में प्रकाशित हुई है- 'पद घुंघरू बांध'।

प्रस्तुति- मा मोक्ष संगीता

- 'पद घुंघरू बांध'

इस स्तंभ में प्रत्येक माह एक कहानी शेयर करेंगे जो हर उम्र वाले बच्चों, युवाओं और बूढ़ों को प्रेरणा देगी।

जीवन- एक कहानी

–ओशो

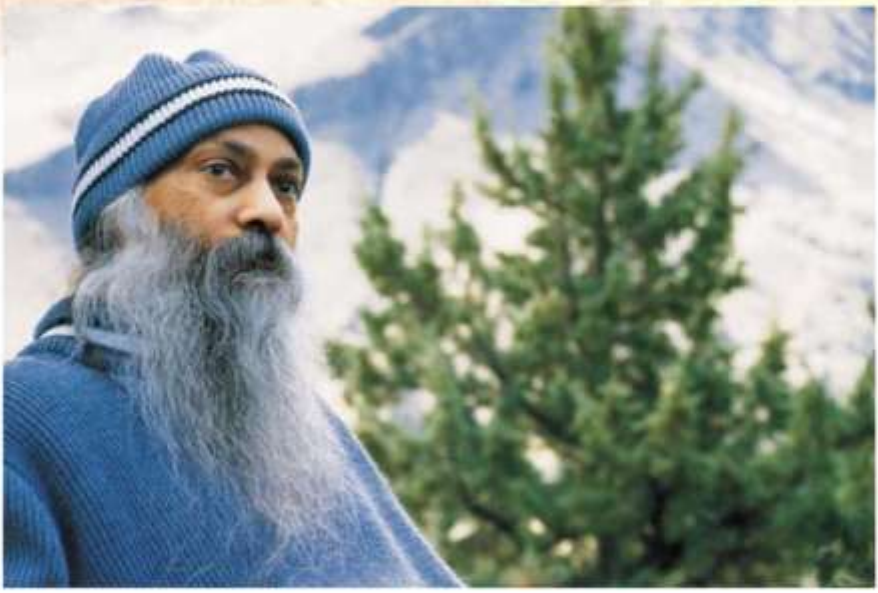

प्रश्न : आपने कहा, 'जीवन एक कहानी है अस्तित्व की मौन शाश्वतता में।' तो फिर मनुष्य क्या है?

कहानी कहने वाला एक जानवर।

अरस्तू ने मनुष्य की व्याख्या रेशनल बीइंग, तार्किक प्राणी की तरह की है। लेकिन मनुष्य तार्किक नहीं है; और यह अच्छा है कि वह तार्किक नहीं है। मनुष्य निन्यानबे प्रतिशत अतार्किक है; और अच्छा है कि वह ऐसा है, क्योंकि अतर्क्य से ही वह सब आता है जो सुंदर है और प्रीतिकर है। तर्क से आता है गणित, अतर्क्य से आता है काव्य; तर्क से आता है विज्ञान, अतर्क्य से आता है धर्म; तर्क से आता है बाजार, धन, रुपया, डॉलर्स; अतर्क्य से आता है प्रेम, गीत, नृत्य। नहीं, यह अच्छा है कि मनुष्य तार्किक प्राणी नहीं है; मनुष्य अतार्किक है।

मनुष्य की बहुत सी परिभाषाएं की गई हैं। मैं कहना चाहूंगा : मनुष्य कहानी गढ़ने वाला प्राणी है। वह मिथक निर्मित कर लेता है–मनगढंत किस्से–कहानियां। सारे पुराण कहानियां हैं। मनुष्य जीवन के विषय में, अस्तित्व के विषय में कहानियां निर्मित कर लेता है।

मनुष्यता के प्रारंभ से ही मनुष्य निर्माण करता रहा है सुंदर पुराणों का। वह निर्मित करता है परमात्मा। वह निर्मित करता है यह बात कि परमात्मा ने संसार को बनाया; और वह गढ़ता रहता है सुंदर–सुंदर कहानियां। वह कल्पनाएं बुनता रहता है, वह नई–नई कहानियां अपने चारों ओर गढ़ता रहता है। मनुष्य कहानियां गढ़ने वाला प्राणी है; और जीवन एकदम उबाऊ हो जाएगा यदि उसके आस–पास कोई कहानी न हो।

आधुनिक युग की तकलीफ यही है: सारी पुरानी प्रतीक–कथाएं गिरा दी गई हैं। नासमझ बुद्धिवादियों ने बहुत ज्यादा विरोध किया उनका। वे खो गईं, क्योंकि यदि तुम प्रतीक–कथा के विपरीत तर्क करने लगते हो, तो प्रतीक–कथा तर्क से नहीं समझी जा सकती। वह तर्क के सामने नहीं टिक सकती। वह बहुत नाजुक होती है; वह बहुत कोमल होती है। यदि तुम उसके साथ लड़ने लगते हो तो तुम उसे नष्ट कर देते हो, लेकिन उसके साथ तुम मानव–हृदय की कोई बहुत सुंदर बात भी नष्ट कर देते हो। वह कल्पित कथा ही नहीं होती–कथा तो केवल प्रतीक है–गहरे में उसकी जड़ें हृदय में होती हैं। यदि तुम प्रतीक–कथा की हत्या कर देते हो तो तुमने हृदय की हत्या कर दी।

अब संसार भर के बुद्धिवादी, जिन्होंने सारी प्रतीक-कथाओं की हत्या कर दी, अब वे अनुभव कर रहे हैं कि जीवन में कोई अर्थ न रहा, कोई काव्य न रहा, आनंदित होने का कोई कारण न रहा, उत्सव मनाने का कोई कारण न रहा। सारा उत्सव खो गया है। प्रतीक-कथाओं के बिना संसार केवल एक बाजार रह जाएगा; सारे मंदिर खो जाएंगे। प्रतीक-कथाओं के बिना तुम विराट शून्यता के बीच अकेले पड़ जाओगे।

जब तक तुम बुद्धत्व को उपलब्ध नहीं हो जाते, तुम कहानियों के बिना नहीं जी सकते; अन्यथा तुम अर्थहीनता अनुभव करोगे, और गहरी चिंता पकड़ेगी, और तुम्हारे प्राण विषाद से घिर जाएंगे। तुम आत्महत्या करने की सोचने लगोगे। तुम कोई न कोई रास्ता ढूंढने लगोगे अपने को उलझाए रखने का-मादक द्रव्य, शराब, सेक्स-ताकि तुम भूल सको स्वयं को, क्योंकि जीवन तो अर्थहीन लगता है।

प्रतीक-कथा देती है अर्थ। प्रतीक-कथा और कुछ नहीं सिवाय एक सुंदर कहानी के, लेकिन यह तुम्हें मदद देती है जीने में। जब तक तुम इतने सक्षम न हो जाओ कि बिना कहानी के जी सको-यह तुम्हें मदद देती है यात्रा में, जीवन-यात्रा में। यह तुम्हारे आस-पास एक मानवीय वातावरण बना देती है; वरना संसार तो बहुत रूखा-सूखा है। जरा सोचो: भारत के लोग नदियों के किनारे जाते हैं, गंगा किनारे जाते हैं-वे पूजा करते हैं उनकी। वह एक मिथक है; अन्यथा गंगा केवल एक नदी है। लेकिन मिथिक से गंगा मां बन जाती है, और जब एक हिंदू गंगा जाता है तो यह उसके लिए एक तीर्थयात्रा हो जाती है, खुशी की बात हो जाती है।

मक्का में पूजा जाने वाला पत्थर, काबा का पत्थर, पत्थर ही है। वह एक क्यूब-स्टोन है, इसीलिए उसे 'काबा' कहा जाता है; 'काबा' का मतलब है क्यूब। लेकिन तुम नहीं जान सकते कि एक मुसलमान को कैसी खुशी होती है, जब वह काबा जाता है। बड़ी अदभुत ऊर्जा उमड़ आती है। ऐसा नहीं है कि काबा कुछ करता है-नहीं, वह तो केवल एक मिथक है। लेकिन जब वह घूमता है उस पत्थर को, तो उसके पांव धरती पर नहीं पड़ते; वह एक दूसरे ही संसार में, काव्य के संसार में गति करता जाता है। जब वह परिक्रमा करता है काबा की, तो वह परमात्मा की परिक्रमा कर रहा होता है। संसार भर के मुसलमान जब प्रार्थना करने बैठते हैं तो वे काबा की ओर मुंह करके बैठते हैं। दिशाएं अलग होती हैं : कोई इंग्लैंड में प्रार्थना कर रहा है, लेकिन मुंह रखता है काबा की ओर; कोई भारत में प्रार्थना कर रहा है, लेकिन मुंह रखता है काबा की ओर; कोई मिस्र में प्रार्थना कर रहा है, लेकिन मुंह रखता है काबा की ओर। संसार भर में मुसलमान पांच बार नमाज पढ़ते हैं, सारे संसार में हर कहीं, और वे मुंह रखते हैं काबा की तरफ-काबा संसार का केंद्र हो जाता है। एक प्रतीक है, एक सुंदर प्रतीक। उस क्षण में सारा संसार एक काव्य से आच्छादित हो जाता है।

मनुष्य अस्तित्व को अर्थ देता है; यही है प्रतीक-कथा का कुल अर्थ। मनुष्य कहानियां गढ़ने वाला प्राणी है। फिर छोटी-छोटी कहानियां हैं-मोहल्ले-पड़ोस की, पड़ोसी की पत्नी की; और बड़ी कहानियां हैं-ब्रह्मांड की, परमात्मा की। लेकिन मनुष्य को बड़ा रस आता है कहानियों में।

मुझे एक कहानी बहुत प्रीतिकर है; मैंने बहुत बार कही है। एक यहूदी कहानी है :

बहुत वर्ष पहले, बहुत सदियों पहले एक नगर में एक रबाई रहता था। जब भी नगर में कोई मुसीबत आती, वह जंगल में जाता, कोई यज्ञ करता, प्रार्थना करता, अनुष्ठान करता; और परमात्मा से कहता, 'मुसीबत दूर करो। हमें बचाओ।' और नगर की सदा रक्षा हो जाती।

फिर वह रबाई मरा; दूसरा आदमी रबाई बना। नगर पर मुसीबत आई; लोग घबड़ाए, इकट्ठे हुए। रबाई गया जंगल में, लेकिन वह ठीक स्थान नहीं खोज पाया। उसे पता ही नहीं था। तो उसने परमात्मा से कहा, 'मुझे ठीक-ठीक स्थान पता नहीं है जहां वह बूढ़ा रबाई आपसे प्रार्थना किया करता था, लेकिन उससे लेना-देना भी क्या है। आप तो वह स्थान जानते ही हैं, तो मैं यहीं बैठ कर प्रार्थना करूंगा।' नगर पर कभी कोई मुसीबत न आई। लोग प्रसन्न थे।

फिर यह रबाई भी मरा; तो दूसरा रबाई आया। फिर नगर पर कोई मुसीबत आई, लोग इकट्ठे हुए। वह जंगल में गया, लेकिन उसने परमात्मा से कहा, 'मुझे ठीक-ठीक पता नहीं कि वह स्थान कहां है। अनुष्ठान, कर्म-कांड वगैरह कुछ मैं जानता नहीं। मैं तो केवल प्रार्थना जानता हूं। हे प्रभु, कृपा करें, आप तो सब कुछ जानते हैं, शेष विस्तार की फिक्र न करें। मेरी प्रार्थना सुनें...।' और जो उसे कहना था उसने कहा। संकट टल गया।

फिर वह भी मरा; और दूसरा रबाई आया। नगर के लोग इकट्ठा हुए, मुसीबत की घड़ी थी, कोई महामारी फैली थी, और लोगों ने कहा, 'आप प्रार्थना करने जंगल में जाएं; ऐसा ही सदा से होता आया है। पुराने रबाई सदा जंगल जाते रहे हैं।'

वह बैठा हुआ अपनी आरामकुर्सी पर। उसने कहा, 'वहां जाने की क्या जरूरत है? परमात्मा यहीं से सुन सकता है। और मैं कुछ जानता नहीं।' तो उसने नजरें उठाईं आकाश की ओर और कहा, 'सुनो, ठीक स्थान मैं जानता नहीं, मुझे क्रिया-कांड के बारे में कुछ पता नहीं-मैं तो प्रार्थना भी कुछ नहीं जानता। मुझे तो बस यह कहानी मालूम है कि पहला रबाई कैसे वहां जाता था, दूसरा कैसे जाता था, तीसरा कैसे जाता था, चौथा कैसे जाता था... मैं आपसे यही कहानी कह दूंगा-और मैं जानता हूं कि कहानियां आपको प्रिय हैं। कृपया कहानी सुन लें और गांव को मुसीबत से बचा लें।' और उसने पुराने रबाइयों की सारी कहानी कह दी। और ऐसा कहा जाता है, परमात्मा को वह कहानी इतनी पसंद आई कि नगर की रक्षा हो गई।

उसे जरूर कहानियां बहुत प्रिय हैं; वह स्वयं कहानियां गढ़ता रहता है। उसे प्रिय होनी ही चाहिए कहानियां। उसी ने सबसे पहले यह जीवन की पूरी कहानी गढ़ी।

हां, जीवन एक कहानी है, अस्तित्व के शाश्वत मौन में एक छोटी सी कहानी, और मनुष्य है कहानी गढ़ने वाला प्राणी। जब तक कि तुम परमात्मा न हो जाओ तुम्हें कहानियां पसंद आएंगी: तुम्हें भाएंगी राम और सीता की कहानियां, महाभारत की कहानियां; तुम्हें भाएंगी यूनान की, रोम की, चीन की कहानियां। लाखों-लाखों कहानियां हैं-सभी सुंदर हैं।

यदि तुम तर्क को बीच में न लाओ, तो वे बहुत से भीतरी द्वारों को खोल सकती हैं, वे बहुत से आंतरिक रहस्यों को उदघाटित कर सकती हैं। यदि तुम तर्क करने लगते हो, तो द्वार बंद हो जाते हैं। तब वह मंदिर तुम्हारे लिए नहीं है। प्रेम करो कहानियों से। जब तुम उन्हें प्रेम करते हो, तो वे अपने रहस्यों को खोल देती हैं।

और बहुत कुछ छिपा हैं उन कहानियों में: मनुष्यता ने जो भी खोजा है, वह सब छिपा है प्रतीक-कथाओं में। इसीलिए, जीसस, बुद्ध कहानियों में बोलते हैं। उन सब को कहानियां प्रिय रही हैं।

-ओशो, पतंजलि योग सूत्र, भाग-3, प्रवचन नं.-14, नौवां प्रश्न

होली पर्व का आध्यात्मिक भावार्थ

—मा अमृत प्रिया जी

सभी मित्रों को नमस्कार और होली की अनेक-अनेक बधाइयां।

इस त्यौहार के अवसर पर मुझे अचानक याद आई सन 1982 की एक बात। उस समय सदगुरु ओशो की माताजी, मां अमृत सरस्वती जी रजनीशपुरम में थीं। अमेरिका के ओरेगॉन प्रांत में 64 हजार एकड़ भूमि पर संन्यासियों द्वारा यह विशाल नगर बसाया जा रहा था।

बाहर के सृजन और विकास कार्य तो सब को दिखाई पड़ते हैं। किंतु सदगुरु का असली काम तो शिष्यों की अंतरात्मा का विकास होता है। उनकी भावना और चेतना को निखारना होता है।

माताजी ने फागुन की पूर्णिमा को एक प्यारा गीत रचा और उसकी मधुर धुन भी निर्मित की। उस गीत में उन्होंने सदगुरु के कार्य को होली खेलने की उपमा दी। वास्तव में वह गंभीर काम नहीं, खेल ही होता है, उत्सव ही होता है। शायद आप जानते होंगे कि ओशो के बचपन का नाम रजनीश चंद्र मोहन था। इस गीत में माताजी ने उन्हें मोहन नाम से ही संबोधित किया है। मैं उस गीत की चंद पंक्तियां गुनगुनाती हूं।

होली खेले मेरा मोहन
नंदन वन में होली खेले
नंदन वन में रे महावन में
ओरेगॉन वन में होली खेले

काहे की मोहन होली बनाई
काहे की आग जलाई रे वन में
काम क्रोध की होली बनाई
ध्यान की आग जलाई रे वन में

काहे का मोहन रंग बनाया
काहे की उड़त गुलाल रे वन में
सत्संग का रंग बनाया
शांति की उड़त गुलाल रे वन में

आओ, होली पर्व के प्रतीकों में छिपे आध्यात्मिक भावार्थ को समझें।

सदगुरु वही है जो हमारे हृदय को मोह ले– मनमोहन! इसीलिए तो भगवान कृष्ण का यह नाम पड़ गया। स्मरण रहे, गुरु–शिष्य का नाता हार्दिक नाता होता है, बौद्धिक संबंध नहीं। जगत में जो हमें ज्ञान देते हैं, विचारों और सूचनाओं से भरकर हमारे मन को मजबूत बनाते हैं उन्हें हम शिक्षक या गुरु कहते हैं। फिर सदगुरु का क्या अर्थ है? वह सामान्य गुरु से बिल्कुल विपरीत काम करता है। वह निर्विचार होने की कला सिखाता है। मन के पार, आत्मा के तल पर ले जाता है। सदगुरु मनोहारी है, मनमोहन है।

यह समूचा विश्व ही नंदन वन है। जब हम जीवन को खेल की भांति, लीला की तरह जीना सीख जाते हैं तो जिंदगी स्वर्ग हो जाती है। जब हम गंभीर, तनावग्रस्त, चिंतित और भयभीत जीते हैं तो जिंदगी नर्क हो जाती है। अभिमान नर्क है। निर–अहंकार स्वर्ग है। सब हमारे देखने के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। भयावह कानन भी यहीं है और सुंदर नंदनवन भी यहीं है।

काम और क्रोध मनुष्य के भीतर छिपी शक्तियां हैं। अक्सर हम इनका सिर्फ दुरुपयोग करते हैं। स्वयं पीड़ित होते हैं और आसपास के लोगों को भी परेशान करते हैं। लेकिन इनका सदुपयोग भी संभव है। तब यही विध्वंशक शक्तियां बड़े सृजनात्मक रूप ले लेती हैं। एक उदाहरण से समझें जैसे नदी में बाढ़ आती है, जन–धन की हानि पहुंचती है। कभी–कभी तो छोटी सी नदी की बाढ़ भी बड़ी तबाही मचा देती है। इस नदी पर बांध बनाकर पानी को नहरों द्वारा दूर–दूर के खेतों में सिंचाई के लिए ले जाएं तो यही पानी फसलों में सहयोगी हो जाता है। जन–धन का सेवक बन जाता है। इसी पानी से जल–विद्युत पैदा की जा सकती है, गांवों में उजाला हो जाएगा। बताइये– पानी की ऊर्जा निगेटिव है या पॉजीटिव? न्यूट्रल है, हम चाहें तो हानिकारक बना लें, नदी में डूबकर प्राण गंवा दें। और हम चाहें तो अस्पताल के आईसीयू में बिजली के उपकरण चलाकर किसी मरते हुए मरीज की जान बचा लें।

ठीक ऐसे ही अपनी जीवन ऊर्जा का भी रूपांतरण किया जा सकता है। काम–क्रोध के संग होश की साधना जोड़ दें, तो ध्यान फलित हो जाता है। साधरण सी दिखने वाली लकड़ी में छिपी अग्नि प्रगट हो जाती है। ध्यान की इस आग में सब प्रकार की नकारात्मकताएं दग्ध हो जाती हैं। होलिका भस्म हो जाती है और प्रहलाद की भक्ति बच जाती है। सकारात्मक गुण निखर आते हैं, उन्हें आंच नहीं स्पर्श करती। जैसे स्वर्णकार अशुद्ध सोने को अग्नि से गुजारकर, अशुद्धियों को

जला देता है और 24 कैरेट गोल्ड, कुंदन शेष बचता है। ध्यान की आग में केवल काम-क्रोध ही नहीं; ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, माया, लोभ, घमंड आदि सारी कलुषताएं वाष्पीभूत हो जाती हैं।

जीवन में सर्वाधिक प्यारा रंग सत्संग का रंग है। प्राचीन काल से ही सदगुरु को रंगरेज कहा जाता रहा है। रजनीशपुरम इसीलिए तो बसाया गया ताकि हजारों-लाखों शिष्यों को संन्यास के गैरिक रंग में रंगा जा सके। समस्त सदगुरुओं का यह प्रयास रहा है कि उनके निकट आकर लोग बस सकें। उनके आसपास की आबोहवा में जी सकें। उनकी समाधि की तरंगों को पी सकें।

मनुष्य के मन पर संग-साथ का बड़ा प्रभाव पड़ता है। सोचो, कोई उदास बैठा है और चार दोस्त-यार आकर हंसी-मजाक करने लगे, तो उसकी उदासी कितनी देर टिक पाएगी? शीघ्र ही उसका मूड भी अच्छा हो जाएगा। इसका उल्टा भी संभव है। एक व्यक्ति भलाचंगा जा रहा था, रास्ते में चार मित्र मिल गए जो किसी चिंता में थे। वह भी चिंतित और परेशान हो जाएगा। जल्दी ही उसकी हंसी-खुशी भी खो जाएगी। जैसे कीटाणुओं का इंन्फेक्शन फैलता है, ठीक वैसे ही हमारी मनोदशाएं भी संक्रमित होती हैं। भावनाओं का भी इंन्फेक्शन लग जाता है। कहीं लोग सांप्रदायिक दंगा फसाद करने वाले हैं, एक सज्जन व्यक्ति भी वहां से गुजरते हुए उतेजित हो उठेगा। भूल जाएगा अपने शिक्षा-संस्कार, सभ्यता के नियम वगैरह। दंगे में शामिल हो जाएगा।

जिस प्रकार निगेटिव भावना, अशांति फैलती है; उसी प्रकार पॉजीटिव भावना, शांति भी फैलती है। जीवन में असली गुलाल तो शांति की, प्रीति की, सदभावना की गुलाल है। अच्छे लोगों को मिल-जुलकर, मंगलभाव में डूबना चाहिए और जग-कल्याण के प्रयास करने चाहिए। बस, दूसरों का भला करने के पहले आत्म-कल्याण करना मत भूलना। ध्यान साधना यानी स्वयं का भला, शांति में रसमग्न होने की कला। जहां शांति है, वहां प्रीति होगी, भक्ति होगी, प्रभु की प्रतीति होगी। जिंदगी की वास्तविक, आध्यात्मिक होली होगी।

ऐसा सच्चा त्यौहार सबके जीवन में घट सके, इस हेतु शुभकामनाएं। जय ओशो!

प्रभु ने छेड़ा मन का तार

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

दिल्ली से पिंकी पूछती हैं कि मेरी मौसी ने समाधि शिविर करके मुझे बताया कि वे भारहीनता अनुभव करती हैं एवं निरंतर एक ध्वनि सुनती हैं। कोई आवाज सदा कैसे हो सकती है? मैं एम.एस.सी. फिज़िक्स की छात्रा यह मान ही नहीं सकती। सिद्ध करके बताएं कि गुरुत्वाकर्षण के विपरीत निर्भारता कैसे हो सकती है?

तुम विज्ञान की छात्रा हो, कम से कम एक बात तो समझो कि बिना प्रयोग किए किसी निष्कर्ष पर न पहुंचो। अभी तुमने तो समाधि शिविर किया ही नहीं, तुम कैसे कह सकती हो कि निर्भारता नहीं हो सकती! प्रयोग करो, उसके बाद निर्णय पर पहुंचना। अभी तुम कैसे कह सकती हो कि कोई ध्वनि निरंतर नहीं हो सकती। आओ छः दिन के लिए समाधि शिविर करो, अगर तुम भी उस ध्वनि को सुनने लगो तब तुमने उस ध्वनि को जान लिया, मानने की कोई जरूरत नहीं। अगर तुम न सुन पाओ तब निर्णय पर पहुंचना कि निरंतर कोई ध्वनि नहीं हो सकती। संतों ने उसी को अनाहत नाद कहा है। तो मैं तुम्हें आमंत्रण देता हूं, मैं तुम्हें अंधविश्वास नहीं देता, मैं नहीं कहता कि तुम अपनी मौसी जी की बात मानो या मेरी बात मानो या किसी की भी बात मानो। कुछ भी मानने की जरूरत नहीं है। परमगुरु ओशो ने जो शिक्षा हमें दी है वह बहुत वैज्ञानिक दृष्टिकोण की है। संदेह सहित तुम्हारा स्वागत है, आओ। बल्कि मुझे तो खुशी होती है जब कोई वैज्ञानिक चित्त के लोग, संदेहशील लोग मेरे पास आते हैं। प्रयोग करो।

जब कोई व्यक्ति सत्य की बात कहता है, सत्य को समझाता है, सत्य के प्रयोग कराता है तब वह प्रयोग से नहीं डरता। जो गुरु तुम्हारे संदेहों से, प्रश्नों से डरते हैं, जानना कि वे गुरु ही नहीं हैं। उन्हें खुद ही अपनी बात पर भरोसा नहीं है क्योंकि शायद उन्होंने स्वयं सत्य को नहीं जाना है। सत्य किसी संदेह से नहीं डरता, सत्य संदेह की अग्नि से गुजर जाता है, उस अग्नि–परीक्षा से वह और भी

सुंदर, खूबसूरत और निखर कर आता है। तुम्हारा स्वागत है, आओ। फिर तुम स्वयं जानोगी कि यह ध्वनि संभव है, तुम खुद सुन सकोगी। मैं कोई लंबी साधना करने के लिए नहीं कह रहा हूं, सिर्फ छः दिन के लिए तुम्हें बुला रहा हूं। छः दिन कुछ भी नहीं है पुराने जमाने में लोग नब्बे–नब्बे साल साधना किया करते थे तब भी उस ओंकार रूपी ब्रह्म को नहीं जान पाते थे। परमगुरु ओशो की कृपा से सारी सुख–सुविधाओं में रहते हुए, बिना कोई त्याग किए, बिना संसार परिवार से भागे, इस एयर कंडीशंड ओशो मंदिर में बैठकर तुम भी उस निरंतर ध्वनि को सुन सकोगी जिसके लिए कबीर साहब कहते हैं–

शबद निरंतर से मन लागा मलिन वासना त्यागी,
उठत बैठत कबहूं न छूटे ऐसी ताड़ी लागी,
साधो सहज समाधि भली।

पिंकी, आओ और उस समाधि में डूबो। तुम्हारे भीतर भी वह नाद गूंज रहा है। और एक अद्भुत घटना घटेगी.. जैसे–जैसे उस नाद से तुम्हारा तादात्म्य बनता जाएगा वैसे–वैसे तुम्हें भारहीनता का एहसास होगा।

अभी पिछली सदी में सोवियत रूस में एक अद्भुत नर्तक हुआ। उसका नाम था निझिंसकी। कभी–कभी नाचते–नाचते वह छलांग लगाता था, बड़ी ऊंची छलांग जो कि मानवीय रूप से संभव नहीं थी। और उससे भी अद्भुत घटना... जब वह ऊपर से नीचे उतरता था तो फिज़िक्स का नियम उस पर लागू नहीं होता था। सामान्य नियम है कि कोई भी चीज ऊपर से नीचे गिरेगी, लगभग बत्तीस फुट प्रति सेकेंड की गति से, और हर एक सेकेंड के बाद उसकी गति बत्तीस फुट प्रति सेकेंड बढ़ती जाएगी। लेकिन निझिंसकी यूं नीचे उतरता था जैसे हवा में लहराता हुआ कोई सूखा पत्ता नीचे उतर रहा हो। बड़ा चमत्कार लगता था और चूंकि सोवियत रूस में वह पैदा हुआ था, वैज्ञानिकों ने बड़े परीक्षण किए लेकिन किसी निष्कर्ष पर न पहुंच सके कि ये कैसे होता है। वे निझिंसकी से पूछते कि तुम क्या करते हो? वह कहता कि मैं कुछ भी नहीं करता हूं, सच पूछो तो जब मैं होता ही नहीं, मैं कुछ करता ही नहीं तब यह घटना घटती है।

नाचते–नाचते जब वह ओंकार के भीतर डूब जाता था, निराकार में लीन हो जाता था, तब यह सुंदर घटना घटती थी। तो निर्भारता का एहसास तो प्रत्येक समाधि के साधक को हो जाता है, यदा–कदा ऐसी विचित्र घटना भी घटती है कि सचमुच में स्थूल शरीर का वजन समाप्त हो जाता है, समाप्त अगर नहीं होता तो कम तो हो ही जाता है... थोड़ी देर के लिए ही सही। तुम इसकी जांच–परख कर

सकती हो, स्वयं इस अनुभव से गुजर सकती हो। क्योंकि उस नाद का, उस ओंकार का, उस निरंतर ध्वनि का कोई वेट नहीं है, वेटलेसनेस है वहां पर, शरीर का भार है लेकिन ओंकार का भार नहीं है, वह बिल्कुल निर्भार है। चूंकि हमारा देह से तादात्म्य बन गया है इसलिए हम अपने आप को भारी समझते हैं। चेतना से तादात्म्य हो जाए तो निर्भारता का एहसास हो जाता है। सुनो यह प्यारा गीत–

किसने छेड़ा मन का तार, किसने छेड़ा मन का तार
आज सुनाई देती है क्यूं मीठी–सी झंकार. . .
छुप के करता कौन इशारे, किसके दो नैना मतवारे
देख रहे मुझको छिप–छिप कर, भरा नजर में प्यार. . .
बाज उठी जब पायल छम–छम, मन ने ली अंगड़ाई उस दम
घुंघरू के उस रुनझुन सुर में झूम उठा संसार. . .
गूंज रहे अब मेरे मन में, मस्ती भरे रसीले नग्मे
उड़ता जैसे मुक्त गगन में, पंछी कोई निर्भार. . .
किसने छेड़ा मन का तार, किसने छेड़ा मन का तार, आज सुनाई...
हरि ने छेड़ा हृदय सितार, प्रभु ने छेड़ा मन का तार,
गूंज रही इक ध्वनि निरंतर, यही तो है ओंकार, सब धर्मों का सार।

उड़ता जैसे मुक्त गगन में... ठीक ऐसी ही अवस्था समाधि साधक की हो जाती है। ये गीत तो किसी साधारण गीतकार ने लिखा है, अपने प्रेमपात्र के बारे में लिखा है। जरा सोचो कि जब परमात्मा के परम प्रेम में तुम डूबोगी तो क्या होगा। तब तुम कहोगी –

प्रभु ने छेड़ा मन का तार, हरि ने छेड़ा हृदय सितार,
गूंज रही एक ध्वनि निरंतर, यही तो है ओंकार।

यही तो है ओंकार, सब धर्मों का सार। उस ओंकार में डूबने के लिए तुम्हें निमंत्रित करता हूं, अपनी वैज्ञानिक दृष्टि सहित आओ। तुम्हारा स्वागत है।

असली संन्यास

-स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

प्रश्न – ओशो की बताई ध्यान विधियां करने पर हमें क्या मिलेगा और कितने समय में मिलेगा? पूछते हैं मुंबई से करण वाडेकर।

मिलेगा वही जो पहले से ही उपलब्ध है। तुम स्वयं अपने आपसे ही मिलोगे। हां, खो जाएगा बहुत कुछ, अहंकार खो जाएगा और ओंकार मिल जाएगा, स्वभाव मिलेगा और प्रभाव समाप्त हो जाएंगे, साकार से निराकार की ओर यात्रा होगी, अशांति खो जाएगी शांति उपलब्ध होगी। उपलब्ध शब्द जब मैं कहता हूं तो उससे एक भ्रांति पैदा होती है। ऐसा लगता है कि जैसे कोई नई चीज मिलेगी। मैं स्पष्ट कर दूं कि नया कुछ भी न मिलेगा। अशांति संसार का प्रभाव थी, वह खो जाएगी; शांति तुम्हारा स्वभाव है, वह उजागर हो जाएगी। दूसरे शब्दों में तुम कह सकते हो मिलेगा कुछ भी नहीं, खो जाएगा बहुत कुछ। व्याधि खो जाएगी समाधि उपलब्ध होगी, दुख समाप्त हो जाएगा आनंद मिलेगा या कह लो कि जो मिला ही हुआ है उसका पता चल जाएगा, उसका अनावरण हो जाएगा। ऊपर का आवरण जिससे वह ढका था वह हट जाएगा।

कल मैं एक चुटकुला पढ़ रहा था, सेठ चंदूलाल के घर लोग पहुंचे। मारवाड़ी सेठ चंदूलाल ने उनका स्वागत करते हुए कहा– आइए आइए! अरे आने से पहले कम से कम फोन तो कर दिया होता। लोगों ने जवाब दिया कि अगर हम फोन कर देते तो सेठजी आप मिलते ही नहीं क्योंकि हम अपनी उधारी वसूलने आए हैं।

तुम पूछते हो ध्यान रूपी मेहमान कब आएगा? बिना बताए आएगा, अतिथि। अतिथि का मतलब जो बिना तिथि बताए आ जाए, बिना फोन किए आ जाए। क्योंकि दुख से, अशांति से हमारा गहरा लगाव है, एक गहन दुखाकर्षण हमारे भीतर है, हम उसको पकड़कर रखे हुए हैं और छोड़ना नहीं चाहते। अगर परमात्मा अचानक न आया, बताकर आया तो हम इंतजाम कर लेंगे अहंकार को कहीं छिपाने का। ध्यान जब तुम्हारे जीवन में आएगा, अनायास ही आएगा। बिना किसी पूर्व सूचना के आएगा। याद रखना, उधारी वसूलने आया है। यह जो अहंकार हमने अर्जित किया है, ये जो दुख हमने इकट्ठे किए हैं, ये सब उधार हैं। ये हमारा स्वभाव नहीं हैं, ये छीन लिए जाएंगे। परमात्मा तुमसे वह सब छीन लेगा जो भी उधार है।

ओशो की एक प्रवचनमाला है 'हरि ओम तत्सत्'। उसमें वे समझाते हैं–

हरि शब्द का एक अर्थ तो है परमात्मा और दूसरा अर्थ है चोर, हरण करने वाला। परमात्मा चोर है। वह क्या चुराएगा? वह तुमसे तुम्हीं को चुरा लेगा। ईश्वर से भी ज्यादा प्यारा अर्थ है हरि का, हरण करने वाला। इसलिए वह बिना बताए ही आएगा। तुम पता नहीं क्या सोच रहे होगे, सुन लिए होंगे गुलाल के वचन झरत दसहुं दिश मोती, कि सुन ली होगी मीराबाई की वाणी पायो जी मैंने रामरतन धन पायो। तुमने सोचा होगा कि हो सकता है ध्यान करने से नोटों की वर्षा हो जाएगी, कि हीरे जवाहरात बरसने लगेंगे, ऐसा कुछ भी नहीं होगा। हां, वह रामरतन धन, वह ध्वनि, वह असली मोती तुम स्वयं ही हो। इसलिए उपलब्धि की भाषा में, प्राप्ति की भाषा में न सोचो।

प्रश्न – आम धारणा है कि गहराई में जाने वाले लोग गृहस्थ जीवन से पक जाते हैं। अतः परिवार व समाज वाले साधना हेतु प्रेरित नहीं करते। उनके मन में अनजाना–सा भय रहता है, कृपया इस पर प्रकाश डालें। पूछती हैं रजौरी जम्मू कश्मीर से कंचन देवी शर्मा।

समाज और परिवार वालों के मन में जो भय है वह भी स्वाभाविक है, पुराने धर्मों के कारण। पुराने धर्मों ने त्याग को बड़ा महत्व दिया। परिवार, समाज, संसार छोड़कर भाग जाओ, इसी को संन्यास कहा। याद रखना, भगवान श्रीकृष्ण ने इसको संन्यास नहीं कहा। अभी–अभी हम अठारहवें अध्याय की चर्चा कर रहे थे। उसमें कहीं भी त्याग की वैसी धारणा नहीं आती जैसी कि बाद में प्रचलित हो गई। भगवान श्रीकृष्ण का संन्यास तो ठीक वही है जिसको ओशो नवसंन्यास कह रहे हैं। लेकिन भगवान जाने क्यों किसी दुर्भाग्य से इस देश में त्यागवादी धारणा प्रचलित हो गई।

लाखों लोग घर-परिवार छोड़कर भाग गए। उनको आनंद मिला कि नहीं मिला ईश्वर जाने, पर उनके कारण लाखों-करोड़ों लोगों को बहुत दुख मिला, एक-एक आदमी कम से कम बीस-पच्चीस लोगों से गहराई से जुड़ा है, प्रेम के उसके नाते हैं। एक व्यक्ति के अलग हो जाने से, भाग जाने से कम से कम बीस-पच्चीस लोग दुखी होते हैं। उसकी पत्नी अपने पति के रहते हुए भी अब विधवा जैसी जिंदगी जिएगी, उसके बच्चे अपने बाप के रहते हुए भी अब अनाथ के जैसे जीवन जिएंगे। उसके बूढ़े माता-पिता जिन्होंने अपने बेटे को बुढ़ापे की लाठी समझा था, वह जंगल चला गया तो इन बूढ़े मां-बाप का क्या होगा! इनको कितने कष्ट झेलने पड़ेंगे! इसलिए बहुत लोगों को दुखी होना पड़ा।

संन्यास की यह पुरानी धारणा, त्यागवादी धारणा बिल्कुल ही गलत थी। इसलिए न ही कृष्ण उसके पक्ष में हैं और न ही ओशो उसके पक्ष में हैं। वह त्याग क्यों घटित हुआ इस बात को भी समझना। इसके पीछे भी एक बुनियादी कारण है। संसार के हमारे अनुभव में कीचड़ और कमल दोनों हैं, प्रेम और घृणा दोनों हैं, सुख और दुख दोनों हैं। सोना है लेकिन उसमें अशुद्धियां मिली हुई हैं। इसलिए हम अशुद्धियों से घबराकर, छोड़कर भाग जाते हैं और इस भागने में सोना भी छूट जाता है।

संन्यास की असली कला क्या है? सोने को निखारो, अशुद्धियों को निखारो, घृणा को समाप्त करो और प्रेम को बचाओ। तभी तो साधना होगी, भागने में साधना न होगी। वह भागा हुआ व्यक्ति अपने पुराने मन को लेकर चला गया, वही मन जिसमें मोह, राग और आसक्तियां थीं, जिसमें अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष था, जिसमें सांप्रदायिक, कट्टरपंथी धारणाएं थीं। अब वह साधु होकर भी कह रहा है कि मैं जैन साधु हूं, कि मैं हिन्दू संन्यासी हूं, कि मैं मुसलमान फकीर हूं, आश्चर्य! कहता है कि समाज को छोड़ दिया। छोड़ा कहां? समाज ने जो धर्म सिखाया था, जो संप्रदाय सिखाया था वह तो साथ ही आ गया। तो संसार का अनुभव सुख-दुख का मिश्रित अनुभव है। अब दो उपाय हैं- या तो दुख से बचने के लिए भाग खड़े होओ तब सुख भी छूट जाएगा और इसलिए संन्यासी गृहस्थ से भी ज्यादा उदास और चिंतित हो जाता है, उसका साधारण सुख भी गया। और असली संन्यास वह है जो तुम्हें मोक्ष की तरफ ले जाएगा। वह है साधना, भागना नहीं वरन् जागना। हां, गौर से देखो कौन सी चीज दुख देती है? ये तुम्हारा अहंकार, घृणा का तत्व, तुम्हारा द्वंद्वात्मक मन- उससे दुख मिल रहा है, उससे मुक्त होओ। संसार को छोड़कर नहीं भागना है, इस द्वंद्वात्मक मन के पार जाना है।

मैं एक गीत पढ़ रहा था -

हम तुझसे मोहब्बत करके सनम रोते भी रहे हंसते भी रहे,
खुश होकर सहे उल्फत के सितम रोते भी रहे हंसते भी रहे।
ऐ दिल की लगी तुझको क्या खबर इक दर्द उठा थर्रायी नजर,
खामोश थे हम इस गम की कसम, रोते भी रहे हंसते भी रहे।
यह दिल जो जला इक आग लगी आंसू जो बहे बरसात हुई,
बादल की तरह आवारा थे हम, रोते भी रहे हंसते भी रहे।

संसार के अनुभव में हास्य और रुदन इकट्ठा है। भागने वाला दोनों से भाग जाता है और उसकी मुस्कराहट गायब हो जाती है। कृष्ण और ओशो जिस संन्यास की बात कर रहे हैं, जिस मोक्ष की तरफ इशारा कर रहे हैं, उसमें रुदन से छूटना है और मुस्कराहट, प्रफुल्लता और हंसी को बचाना है। वही असली संन्यास है।

क्वोरा प्रश्नोत्तर

-स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

हिंदी में क्वोरा पर पढ़ने के लिए संबंधित लिंक पर क्लिक कीजिए

Q क्यों ओशो के नजरिये में प्रभु तक पहुंचने की दो प्रक्रियाएं 'ध्यान और प्रेम' हैं?

Q क्या आप ओशो के इस विचित्र से वक्तव्य से राजी हैं कि 'सत्य है परम स्वीकार स्वयं का, और तब शेष गुण छाया की तरह अपने-आप चले आते हैं'?

Q क्या मनुष्य की एकमात्र समस्या, भीतर का खालीपन है?

Q ओशो के इस कथन का भावार्थ समझाएं कि 'उत्सव का अर्थ है: धन्यवाद की भावना'?

Q क्या करुणा की भावना के द्वारा स्वास्थ्य की उपलब्धि संभव है?

मा एवं स्वामी जी के वीडियो प्रश्नोत्तर

Swami Shailendra ji Videos

क्या समाधी पाने के लिए अनहद नाद की साधना करनी चाहिए? अनहद नाद को Right कान से सुने या Left से?

सास और बहु में नहीं बनती, ऐसे में क्या करें? जनरेशन गैप को कैसे Manage करें?

प्रथम बार इस विषय पर चर्चा – सात शरीरों के तनाव और उनसे मुक्ति के उपाय

10000+views in a day

सिक्किम की सबसे बड़ी न्यूज़ चैनल पर हिंदी में इंटरव्यू। केवल प्रथम डेढ़ मिनिट का परिचय नेपाली भाषा में है।
प्रश्नकर्ता ने ओशो की जीवन दृष्टि संबंधी विविध आयाम बखूबी स्पर्श किए हैं।

सवा सौ किताबों के शीर्षकों में ॐ की ओर संकेत।
अग्रेंजी का यह पूरा इंटरव्यू, ब्राजील सबटाइटल्स के संग –

ओशो की ध्यान विधियों में नाद श्रवण का महत्व जानने के लिए, नीचे दिए, गए लिंक को क्लिक करें। ओशो प्रेमी, संन्यासी, साधक मित्रों के लिए, अत्यंत उपयोगी गहन गंभीर इंटरव्यू।

Maa Amrit Priya ji Video -

प्रेम क्या है?

आलोक वर्षा

काम का अर्थ है... मेरा सुख मेरे बाहर है।
ध्यान का अर्थ है... मेरा सुख मेरे अंदर है।
-ओशो

हंस दो जरा...!

टीचर – तुम कल स्कूल क्यों नहीं आये थे?
लड़का – जी वो, कल मेरे घर में पूजा थी

टीचर – तो परसों क्यों नहीं आये ?
लड़का – जी परसों मेरे घर प्रिया थी

पत्नी :– अजी उठ जाओ,
मैं चाय बना रही हुँ
पति :– तो मैं कौनसा पतीले
में सो रहा हूं!!
बना लो 😜😀

ध्यान साधना शिविर कार्यक्रम

Date	Program	Based on/Place	Contact
20-25 Mar	ओशो 'अंतर्यात्रा' शिविर नाभि–यात्रा, मन–साक्षात्कार, ह्रदय–वीणा के सूत्र, 'मैं' से मुक्ति की ओर	जीवन वीणा में संतुलन online	Osho Fragrance Number
27Mar-1Apr	इटरनल अवेयरनेस रिट्रीट 'मृत्योर्मा अमृतम् गमय' मरणधर्मा क्षणभंगुर से शाश्वत चैतन्य की ओर	अमृत चैतन्य का अनुभव online	Osho Fragrance Number
4 April	सत्संग – आनंद कहां और कैसे?	Mahakavi Padmakar Sabhaghar, Motinagar Chauraha, Bhopal road Sagar, MP - 470002	7909681944 8898579060 , 7509347222
5-7 April	Right Mindfulness Retreat	based on 10 commandments of Osho The Heritage Convention, Kanera Dev, Sagar, MP	8770777745 9039429906 7509347222
10-15 April	ओशो महावीर रिट्रीट ओशो की दो प्रवचनमालाओं 'महावीर वाणी' तथा 'जिन सूत्र' पर आधारित साधना	विवेक जागरण online	Osho Fragrance Numbers
24-29 April	ताओ साधना शिविर संत लाओत्से, च्वांग्त्से, लीहत्सु एवं लुत्सु की बताई विधियों पर गहन प्रयोग	परम शांति की अनुभूति online	Osho Fragrance Number
7 May	माँ अमृत प्रिया जी का जन्मोत्सव (नोट:इस वर्ष 8 मई नहीं,7 मई को उत्सव होगा)	आनंद उत्सव online + Rajneesh Dhyan Mandir	Osho Fragrance Number
8-13 May	दुख मुक्ति शिविर दुख के कारणों की समझ और निवारण के उपाय	समझ से आनंद online + Rajneesh Dhyan Mandir	Osho Fragrance Number
10-15 May	उत्सव आमार जाति, आनंद आमार गोत्र पर आधारित ध्यान साधना शिविर	आंतरिक आनंद का अनुभव, उत्सव का प्रकटीकरण Rajneesh Dhyan Mandir	Osho Fragrance Number
29 May-3June	कहै कबीर दीवाना कर्म, ज्ञान एवं भक्ति की त्रिमूर्ति संत कबीर के संग दीवानगी के अलौकिक लोक में	साक्षीभाव का अनुभव online	Osho Fragrance Number
18 June	स्वामी शैलेंद्र सरस्वती जी का जन्मोत्सव (नोट: इस वर्ष 17 नहीं, 18 जून को उत्सव होगा)	आनंद उत्सव online+ Rajneesh Dhyan Mandir	Osho Fragrance Number
19-24 June	काम–क्रोध मुक्ति शिविर नकारात्मक से सकारात्मक भावनाओं की ओर सफर	जीवन ऊर्जा रूपांतरण online+ Rajneesh Dhyan Mandir	Osho Fragrance Number
26 Jun-1 July	ओशो जीवन–कला परिवार जनों के साथ प्रेम व स्वतंत्रता के संग आनंद पूर्वक जीने की कला	प्रेम व स्वतंत्रता का समन्वय online+ Rajneesh Dhyan Mandir	Osho Fragrance Number
3 July	गुरु पूर्णिमा उत्सव नकारात्मक से सकारात्मक भावनाओं की ओर सफर	आनंद उत्सव अहोभाव online+ Rajneesh Dhyan Mandir	Osho Fragrance Number
3-8 July	कैवल्य साधना शिविर 'कैवल्य उपनिषद' के ऋषि द्वारा दिए संकेतों पर व्यावहारिक साधना	ब्रह्म ज्ञान का अनुभव online+ Rajneesh Dhyan Mandir	Osho Fragrance Number
3 July	महागीता साधना शिविर [illegible]	आनंद उत्सव अहोभाव online+ Rajneesh Dhyan Mandir	Osho Fragrance Number

मार्च, मई, जून और जुलाई में श्री रजनीश ध्यान मंदिर, सोनीपत में आयोजित किए जा रहे ऑफ़लाइन कार्यक्रमों के लिए, हमें पहले ही बहुत सारे पंजीकरण केलिए नाम प्राप्त हो चुके हैं। चूंकि सीटें सीमित हैं और बुकिंग उपलब्ध सीटों की संख्या से कहीं अधिक हो गई है, हम लॉटरी प्रणाली के माध्यम से सीटों का आवंटन करेंगे। इसलिए कृपया उन सभी कार्यक्रमों के लिए अपना नाम भेजें जिनमें आप शामिल होना चाहते हैं ताकि हम उन्हें लॉटरी में शामिल कर सकें। कृपया तब तक कोई योगदान न करें जब तक आपको हमसे पंजीकरण की पुष्टि नहीं मिल जाती।

Osho Fragrance Numbers: For Online Programs (10 AM to 8 PM)
9464247452, 9311806388, 9811064442 ,9466661255, 9890341020, 8889709895

Contact Numbers for programs in Shree Rajneesh Dhyan Mandir (Monday to Saturday) (10 AM to 1 PM & 2 PM to 5 PM) 7988229565, 7988969660

प्रिय मित्रों,

आप सभी के प्रेम व समर्थन से हम आश्रम में जल्द ही कार्यक्रम शुरू करने वाले हैं।

पहला आवासीय/ऑफलाइन कार्यक्रम 8 मई 2023 से शुरू होगा।

आप सभी का बहुत बहुत धन्यवाद।

अब जबकि आश्रम, निर्माण के पहले फेज के अंतिम चरण में है, आपसे अनुरोध है कि कृपया अधिक से अधिक यथासंभव योगदान भेजें ताकि योजना के अनुसार निर्माण कार्य हो सके।

कृपया दान राशि को निम्नलिखित बैंक खाते में स्थानांतरित करें और हमें विवरण भेजें।

Name- Osho Fragrance
Account type - Saving
Punjab and Sind Bank,
Pushpanjali Enclave, Delhi.
Account No. 0869 1000 103 430
IFSC code PSIB 000 1030

चल रहे निर्माण कार्य की कुछ तस्वीरें हम आपके साथ सांझा कर रहे हैं।

कुछ सदस्यता विकल्प भी उपलब्ध हैं। यदि आप सदस्यता लेना चाहते हैं तो अधिक जानकारी हेतु हमें संपर्क करें।

धन्यवाद

– ओशो फ्रेगरेंस टीम

ध्यान एवं साधना शिविरों की झलकियां

14–18 फरवरी – महाशिवरात्री के पर्व पर आयोजित झापा, नेपाल में विज्ञान भैरव तंत्र की विधियों पर आधारित साधना शिविर का आयोजन हुआ

खुशखबरीः सिक्किम के माननीय मुख्य मंत्री ने आज 21 फरवरी, 2023 मंगलवार को ओशो इंद्रकिल फाउंडेशन द्वारा नव निर्मित "बुद्धा हाल" के खूबसूरत भवन का उदघाटन किया। यहां पर "बुद्धम शरणं गच्छामि" ओशो ध्यान शिविर का संचालन किया जा रहा है।

सिक्किम क्रहनिकल की समाचार बुलेटिन में ओशो इंद्रकिल फाउंडेशन द्वारा निर्मित बुद्ध भवन के उदघाटन की खबर

'सिक्किम के मुख्य मंत्री की फेसबुक पोस्ट'

बुद्ध भवन के उदघाटन समारोह में स्वामी शैलेंद्र जी का उदबोधन, सिक्किम के मीडिया पर प्रसारित।

मुख्य मंत्री द्वारा ओशो इंद्रकिल फाउंडेशन में बुद्ध हाल के उदघाटन का समाचार TV news में प्रसारित

Summit Times में उदघाटन की खबर प्रकाशित

अधिक जानकारी व संपर्क सूत्र

Osho fragrance Numbers -
9464247452, 9311806388, 9811064442,
9466661255, 9890341020, 8889709895

Youtube page - Rajneesh Fragrance

Facebook page - Rajneesh Fragrance

Instagram - Osho Fragrance

Twitter - Rajneesh Fragrance

oMeditate App -
Osho Fragrance's Mobile App•••

Keep up to date with Osho Fragrance program schedules and live events. Read the latest articles, Osho books, watch the newest videos on various topics, listen to bhajans by Ma Amrit Priya Ji, and participate in guided meditation techniques.

Ask questions to our Masters Swami Shailendra Saraswati and Ma Amrit Priya. Get automatic notifications on key events and daily quotes of Osho wisdom.

Download our official Android App on google play store by searching oMeditate or by clicking on monogram/Logo

Note: The contents are getting updated daily, please keep watching this space for more to come.

Download Osho Hindi & English Books from the link -

contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंध के पिछले अंक...

ओशो सुगंध मासिक ई-पत्रिका जो पढ़ी, देखी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें समाधि में डूबने, आनंद व भाव-विभोर से भरपूर प्रवचनो और भजनों के ऑडियो-वीडियो लिंक्स दिए गए हैं।

नियमित रुप से ई-पत्रिका प्राप्त करने हेतू, अपने मोबाइल नं. को पंजीकृत करवाने के लिए सामने दिए गए चिह्न को दबाएं।

पत्रिका को खोलने के लिए पुस्तक वाले चिह्न को दबाएं।

अभी तक के सभी अंकों के लिए चिह्न को दबाकर उन्हें देख सकते हैं।

क्या आप ओशो सुगंध नियमित प्राप्त करना चाहते हैं

यह एक जीवंत पत्रिका है
ऊपर दिए गए चिह्न को
स्पर्श करने से आपका संदेश
हम तक पहुँच जाएगा
और पत्रिकाएं नियमित रूप से
आप तक भेजने के लिए
आप का मोबाइल न.
पंजीकृत हो जाएगा।

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

ओशो फ्रेग्रन्स की हिन्दी-साहित्य लिंक

सांस से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 1 में 1-28 विधियां

श्रवण से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 2 में 29-56 विधियां

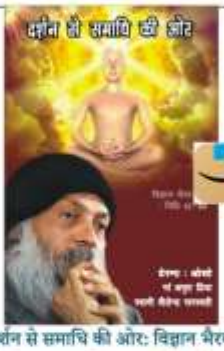

दर्शन से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 3 में 57-84 विधियां

भाव से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 4 में 85-112 विधियां

हास्य-फुलझड़ियां: मुल्ला नसरुद्दीन के प्रेरणादायी लतीफे

जीवन - हंसने-हंसाने का अवसर (Hindi Edition)

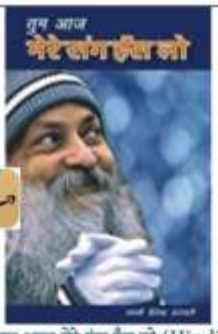

तुम आज मेरे संग हँस लो (Hindi Edition)

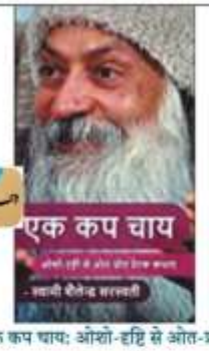

एक कप चाय: ओशो-दृष्टि से ओत-प्रोत प्रेरक कथाएं

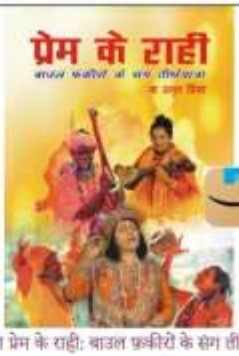

मा प्रेम के राही: बाउल फकीरों के संग तीर्थ यात्रा - मा अमृत प्रिया

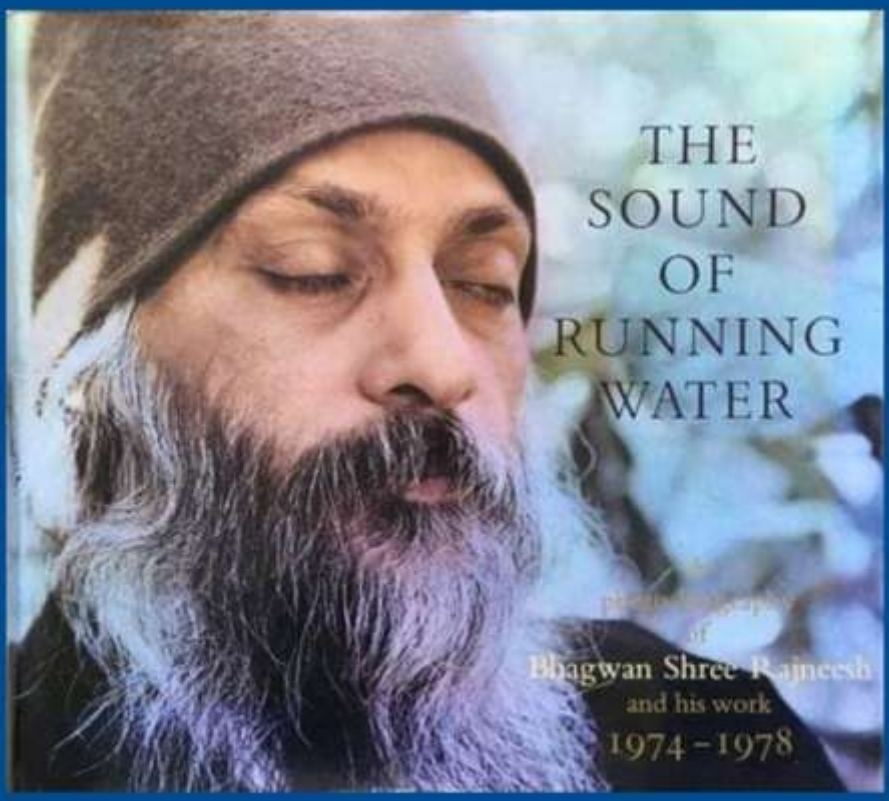

फोटो बायोग्राफी के परिचय में ओशो द्वारा स्वयं के विषय में लिखे अत्यंत महत्वपूर्ण वचन –

The sound of running water

First lines in the introduction of Osho's photo Biography (1974-1978) are as following-
"I am a child on the seashore of time, collecting seashells, coloured stones.
I am tremendously fulfilled. I know not who I am because I am not."
"What I am trying to say to you is a kind of music that I have heard. It has not been heard verbally. It is in the sound of the running water. It is in the wind passing through the pine trees. It is in the songs of the birds. It is in the silence of darkness. It is in the dancing rays of the sun. It is all over the place! But it is a music, And unless you are capable of understanding this music, you will not be able to understand me. You will go on misunderstanding me."
-Bhagwan Shree Rajneesh
Last lines in the introduction of this book with Editor's note- *In giving this title Bhagwan also gave in full, the original quotation of the zen master, Dogen-
"The mountains are the pure body of the Buddha
And the sound of running water his great speech."
"There is a hum of energy everywhere. It is a music and dance throbbing within our fibers, a sound from the very beginning to eternity."

What an unique introduction to his own photo biography!
कितना संक्षिप्त और अनोखा
सार गर्भित परिचय
ओशो ने स्वयं का लिखा।
तन्मन के बारे में
नहीं एक भी शब्द
केवल अंतस चेतन में
गूंज रहा जो शब्द
बस उसकी तरफ इशारा
बड़ा मधुर और प्यारा
ओशो की अत्यंत सुंदर काव्यात्मक भाषा की वजह से हम लोग मुख्य बिंदु से चूक चूक जाते हैं।
ठोस तथ्य भी ऐसा प्रतीत होता है कि कोई हवाई उपमा है, अलंकार की शैली है, गद्य नहीं बल्कि पद्य है।